E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 189 | प्रयागराज, मंगलवार 17 नवंबर, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

पीएम मोदी आसियान समिट के लिए फिलीपींस रवाना,ईस्ट एशिया समिट में भी हिस्सा लेंगे

समुद्री सुरक्षा, व्यापार और जलवायु परिवर्तन पर होगी चर्चा

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फिलीपींस की राजधानी मनीला गए। वे 17 नवंबर को होने वाली भारत-आसियान समिट और ईस्ट एशिया समिट में शामिल होंगे। फिलीपींस के राष्ट्रपति फर्डिनेंड मार्कोस जूनियर ने उन्हें बुलाया है। इस साल फिलीपींस आसियान की अध्यक्षता कर रहा है। इन बैठकों में समुद्र की सुरक्षा, व्यापार, जलवायु परिवर्तन और एशियाई देशों के बीच सहयोग बढ़ाने पर बात होगी। आसियान दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों का संगठन है। इसकी शुरुआत 8 अगस्त 1967 को हुई थी। उस समय इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर और थाईलैंड ने मिलकर इसे बनाया था। उस समय इस इलाके के कई देशों के बीच तनाव था। इन देशों ने तय किया कि आपसी झगड़े बातचीत से सुलझाएंगे और मिलकर आगे बढ़ेंगे। इसी मकसद से यह संगठन बनाया गया था। दुनिया के कई बड़े देशों तक तेल और जरूरी सामान दक्षिण-पूर्व एशिया



के समुद्री रास्तों से पहुंचता है। यह इलाका हिंद महासागर और प्रशांत महासागर के बीच है। यहां का मलक्का स्ट्रेट दुनिया के सबसे व्यस्त समुद्री रास्तों में से एक है। मध्य-पूर्व से चीन, जापान और दक्षिण कोरिया जाने वाला तेल भी इसी रास्ते से गुजरता है। इसके अलावा, दक्षिण चीन सागर से हर साल अरबों डॉलर का सामान दूसरे देशों तक पहुंचता है। इस रास्ते पर तनाव बढ़ने या जहाजों की आवाजाही रुकने से कई देशों में तेल और सामान की सप्लाई प्रभावित हो सकती है। इसका असर आम लोगों की जेब पर भी पड़ सकता है। यही वजह है कि भारत, चीन, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देश इस इलाके पर नजर रखते हैं और यहां शांति बनाए रखना चाहते हैं। भारत के लिए आसियान दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ व्यापार और सुरक्षा बढ़ाने का बड़ा जरिया है।

भारत की 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' का मकसद भी इन देशों के साथ रिश्ते मजबूत करना है। भारत चाहता है कि इन देशों के साथ व्यापार बढ़े, सड़क और समुद्री रास्ते बेहतर हों और सुरक्षा के मुद्दों पर मिलकर काम किया जाए। हिंद-प्रशांत इलाके में शांति बनाए रखना भी भारत की प्राथमिकता है। भारत और आसियान ने 2026 को समुद्री सहयोग वर्ष के रूप में मनाने का फैसला किया है।आगे की खबर पेज संख्या 07 पर...

प्रिंस विलियम ने मुंबई में खेला गली क्रिकेट,मेट्रो में सफर करेंगे-18 नवंबर को पीएम मोदी से मिलेंगे

मुंबई। ब्रिटेन के प्रिंस विलियम और प्रिंसेस केट मिडलटन तीन दिन के भारत दौरे पर पहुंचे हैं। उन्होंने अपने दौरे की शुरुआत सोमवार को मुंबई से की, जहां भारत के पूर्व कप्तान सचिन तेंदुलकर ने उनका स्वागत किया। इस दौरान प्रिंस विलियम और प्रिंसेस केट ने बल्लार्ड एस्टेट में गली क्रिकेट भी खेला। विलियम और केट 17 नवंबर को होने वाले अर्थशॉट प्राइज समारोह में भी शामिल होंगे। इसके बाद 18 नवंबर को दोनों दिल्ली जाएंगे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात करेंगे। विलियम और केट का यह दूसरा आधिकारिक भारत दौरा है। इससे पहले दोनों अप्रैल 2016 में आए थे। मुंबई में प्रिंस विलियम और केट मिडलटन अपने दौरे की शुरुआत गली क्रिकेट के एक कार्यक्रम से करेंगे। इसके बाद दोनों मुंबई की फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े लोगों से मिलेंगे। इस दौरान क्रिकेट, फैशन और फिल्मों के जरिए भारत और ब्रिटेन के बीच पुराने रिश्तों को दिखाया जाएगा। प्रिंस विलियम मेट्रो में सफर करेंगे, जबकि केट मिडलटन एक



अस्पताल जाएंगी। दोनों मुंबई के लोगों से भी मिलेंगे और शहर में चल रहे अलग-अलग कामों के बारे में जानेंगे। इनमें पर्यावरण बचाने और नई तकनीक से जुड़े काम शामिल हैं। प्रिंस विलियम ने करीब 6 साल पहले अर्थशॉट प्राइज की शुरुआत की थी। इसका मकसद पर्यावरण की समस्याओं के नए समाधान खोजने वाले लोगों और संस्थाओं को बढ़ावा देना है। हर साल 5 विजेताओं को चुना जाता है और हर विजेता को 10 लाख पाउंड यानी करीब 11 करोड़ रुपए दिए जाते हैं। इस साल 17 नवंबर को मुंबई में इस पुरस्कार का छठा समारोह होगा। केंसिंग्टन पैलेस के मुताबिक, यह अब तक का सबसे बड़ा आयोजन होगा। इसके लिए भारत के 24 राज्यों के 15 हजार स्कूलों तक कार्यक्रम पहुंचाया गया है। समारोह से पहले प्रिंस विलियम पुरस्कार के फाइनलिस्ट से मुलाकात करेंगे। इस साल भारत की महिंद्रा लास्ट माइल मोबिलिटी भी फाइनलिस्ट में शामिल है। यह कंपनी इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर बनाती है। पहली बार बच्चों के लिए होगा अर्थशॉट अवॉर्ड:- इस बार पहली बार बच्चों के लिए चिल्ड्रन्स अर्थशॉट अवॉर्ड समारोह भी होगा। इसमें 9 से 17 साल के बच्चों के पर्यावरण बचाने से जुड़े विचारों और कामों को सम्मानित किया जाएगा। इसके लिए बच्चों को अपने आसपास की पर्यावरण संबंधी समस्याओं के समाधान तैयार करने के लिए आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम में उनके नए विचारों और कोशिशों को दुनिया के सामने रखा जाएगा।आगे की खबर पेज संख्या 07 पर...

एनवीडिया के सीईओ पद पर लौट सकते हैं जेन्सन हुआंग, मस्क समेत कई दिग्गज समर्थन में उतरे

बीजिंग। दुनिया की सबसे बड़ी एआई चिप कंपनी एनवीडिया के पूर्व सीईओ जेन्सन हुआंग



कंपनी की कमान फिर संभाल सकते हैं। टेस्ला और स्पेसएक्स के सीईओ इलॉन मस्क समेत सिलिकॉन वैली के कई बड़े कारोबारी उनकी वापसी के समर्थन में उतर आए हैं। फाइनेंशियल टाइम्स के मुताबिक, हुआंग ने भी अपने करीबियों से इस बारे में चर्चा की है। समर्थक चाहते हैं कि उन्हें दोबारा कंपनी की जिम्मेदारी दी जाए। पिछले हफ्ते जेन्सन हुआंग के 3 महिलाओं से अफेयर होने की खबरें आई थीं। जेन्सन ने चीन की एलिस हुआंग से अफेयर की बात कबूली और 12 नवंबर को सीईओ पद इस्तीफा दे दिया। बाद में उनके एनवीडिया की दो महिला कर्मचारियों से अफेयर की खबरें भी आईं। अमेरिकी एजेंसियों को शक है कि एलिस चीनी जासूस हैं। इलॉन मस्क और एपिक गेम्स के सीईओ टिम स्वीनी भी जेन्सन हुआंग को वापस लाने के समर्थन में हैं। दोनों ने हुआंग को फिर से सीईओ बनाने की मांग का समर्थन किया है। कंपनी के कई कर्मचारी भी उनकी वापसी चाहते हैं। एनवीडिया में निवेश करने वाली दो कंपनियों ने भी बोर्ड को चिट्ठी लिखी है। इनके प्रमुख ब्रैड गेर्स्टनर और गेविन बेकर का कहना है कि हुआंग ने कंपनी को काफी आगे बढ़ाया है। इसलिए बोर्ड को उन्हें वापस लाने के बारे में सोचना चाहिए। फाइनेंशियल टाइम्स के मुताबिक, हुआंग के समर्थक बड़े कारोबारियों का एक समूह बना रहे हैं। यह समूह कंपनी के बोर्ड और व्हाइट हाउस से उनकी वापसी के लिए समर्थन जुटाने की कोशिश करेगा। हुआंग को लेकर पहला विवाद सिंगापुर की कंपनी मेगास्पीड की पूर्व अधिकारी एलिस हुआंग से जुड़ा है। न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक, दोनों की कई बार मुलाकात हुई थी। एलिस पर चीन की खुफिया एजेंसी के लिए काम करने का भी आरोप है। दूसरा मामला एनवीडिया की हेल्थकेयर वाइस प्रेसिडेंट किम्बर्ली पॉवेल से जुड़ा है। न्यूयॉर्क टाइम्स ने सूत्रों के हवाले से दावा किया था कि दोनों के बीच संबंध थे। किम्बर्ली सीधे हुआंग को रिपोर्ट करती थीं। इसके अलावा रॉयटर्स ने दो लोगों के हवाले से एक तीसरी महिला के साथ भी हुआंग के संबंधों का दावा किया था।आगे की खबर पेज संख्या 07 पर...

शेख हसीना के गृहजनपद गोपालगंज में हिंसा भड़की,गाड़ी जलाई, पुलिस चौकी पर हमला

ढाका। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के गृहनगर गोपालगंज में रविवार को हिंसा भड़क गई। सैकड़ों प्रदर्शनकारियों



ने पुलिस की बख्तरबंद गाड़ी में आग लगा दी और एक पुलिस चौकी में तोड़फोड़ की। उन्होंने पुलिस के बैरिकेड तोड़कर शहर की कई सड़कों पर कब्जा कर लिया। प्रदर्शनकारियों के हाथों में तलवारें और भाले भी थे। इस दौरान उन्होंने 5 अगस्त 2024 को हसीना सरकार गिरने की याद में बनाया गया स्मारक भी तोड़ दिया। गोपालगंज को शेख हसीना की पार्टी अवामी लीग का मजबूत गढ़ माना जाता है। यहां हिंसा ऐसे समय हुई है, जब हसीना ने बांग्लादेश लौटने का ऐलान किया है। वे अगस्त 2024 में छात्र आंदोलन के बाद अपनी सरकार गिरने पर भारत आ गई थीं। तब से भारत में ही रह रही हैं। दिसंबर में बांग्लादेश लौटने की बात कह रही हैं हसीना:-79 साल की शेख हसीना जुलाई से कई बार कह चुकी हैं कि वे दिसंबर में बांग्लादेश लौटेंगी। उन्होंने कहा है कि मौत की सजा सुनाए जाने के बावजूद वे कानूनी लड़ाई लड़ेंगी। बांग्लादेश के अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण ने नवंबर 2025 में हसीना को प्रदर्शनकारियों पर कार्रवाई के मामले में दोषी ठहराया था। कोर्ट ने उन्हें मानवता के खिलाफ अपराधों के लिए उनकी गैरमौजूदगी में मौत की सजा सुनाई थी। हसीना ने इन आरोपों और मुकदमे को मानने से इनकार किया है। बांग्लादेश की भारत से हसीना को वापस भेजने की मांग:- बांग्लादेश सरकार भारत से शेख हसीना को वापस भेजने की मांग कर रही है। इसके लिए दोनों देशों के बीच हुई प्रत्यर्पण संधि का हवाला दिया जा रहा है। हसीना की ओर से लंदन की एक लॉ फर्म ने बांग्लादेश लौटने के लिए पासपोर्ट जारी करने की मांग की थी। हालांकि, बांग्लादेश सरकार ने इसे ठुकरा दिया। कानून मंत्री मो. असदुज्जमान ने शनिवार को कहा कि हसीना को वापस लाने के लिए बांग्लादेश ने जरूरी कानूनी प्रक्रिया पूरी कर ली है। अब भारत को फैसला करना है। बांग्लादेश ने इस मुद्दे को प्रधानमंत्री तारिक रहमान की संभावित भारत यात्रा से भी जोड़ दिया है। ढाका का कहना है कि हसीना और दूसरे भगोड़ों की वापसी से दोनों देशों के बीच यात्रा के लिए अच्छा माहौल बनेगा।आगे की खबर पेज संख्या 07 पर...

लॉन्चिंग के 10 मिनट बाद अमेरिका का वल्कन रॉकेट ब्लास्ट,अमेजन के 40 इंटरनेट सैटेलाइट नष्ट

लॉकहीड-बोइंग कंपनी का 20 साल में पहला मिशन फेल हुआ

केपकेनवेरल। बोइंग और लॉकहीड मार्टिन की जॉइंट कंपनी यूनाइटेड लॉन्च अलायंस



(यूएलए) का वल्कन रॉकेट रविवार को फ्लोरिडा से लॉन्चिंग के 10 मिनट बाद ही फेल हो गया। इस रॉकेट में अमेजन की 'लियो' ब्रॉडबैंड इंटरनेट यूनिट के लिए 40 सैटेलाइट ले जाए जा रहे थे। वे भी नष्ट हो गए । यह यूएलए के 20 साल के इतिहास में पहला कम्पलीट मिशन फेल्योर है। यह वल्कन रॉकेट की मात्र 5वीं उड़ान थी और 9 महीने बाद पहली उड़ान थी। इससे पहले सॉलिड बूस्टर के नोजल में दिक्कत के कारण दो उड़ानों में परेशानी आई थी, जिसे ठीक करने में वक्त लगा। रविवार की उड़ान से पहले भी काउंटडाउन में दो बार रुकावट आई थी- एक बार नेटवर्क के कारण और एक बार ग्राउंड सिस्टम के नाइट्रोजन प्लांट की दिक्कत के कारण। हालांकि अभी इनको फेल्योर से जोड़ा नहीं गया है। अमेजन को बड़ा झटका:-अमेजन को अमेरिकी नियामक एफसीसी के नियम के तहत जुलाई 2029 तक 3,232 सैटेलाइट ऑर्बिट में पहुंचाने हैं।अभी तक अमेजन ने सिर्फ 396 सैटेलाइट लॉन्च किए हैं। रविवार का मिशन सफल होता तो यह संख्या 436 हो जाती और यह वल्कन पर 38 लॉन्च वाली डील की शुरुआत होती। अमेजन ने कहा है कि वह 2026 के अंत तक अमेरिका और ब्रिटेन में लियो की शुरुआती सेवा शुरू करना चाहता है। अब यह शेड्यूल जांच के नतीजे पर निर्भर करेगा। क्या है यूनाइटेड लॉन्च अलायंस:- यूएलए की स्थापना 2006 में हुई थी। यह बोइंग और लॉकहीड मार्टिन का जॉइंट वेंचर है। वल्कन रॉकेट को कंपनी के पुराने एटलस-5 रॉकेट की जगह लेने के लिए बनाया गया है।इस विफलता के बाद वल्कन को लंबे समय तक ग्राउंडेड रहना पड़ सकता है, जब तक इंजीनियर टेलीमेट्री की जांच कर खराबी को ठीक नहीं कर लेते।

इजराइल ने हमास के टॉप कमांडर को सड़क पर एयरस्ट्राइक से मार गिराया

तेल अवीव। इजराइल ने गाजा में हमास के टॉप कमांडर समीर अबू यूनिस को हवाई हमले में मार गिराया है। वह खान यूनिस के अल-मवासी इलाके में सड़क पर चल रहा था तभी इजराइली



सेना ने एयरस्ट्राइक की। हमास और इजराइली सेना ने उसकी मौत की पुष्टि की है। हमास के मुताबिक यूनिस 7 अक्टूबर 2023 को इजराइल पर हुए हमले की योजना बनाने और उसकी निगरानी करने वाले प्रमुख कमांडरों में शामिल था। सेना और इजराइली खुफिया एजेंसी के मुताबिक यूनिस पहले राफा ब्रिगेड का डिप्टी कमांडर और तेल अल-सुल्तान बटालियन का प्रमुख रह चुका था। सेना का आरोप है कि वह इजराइली नागरिकों और सैनिकों पर हमलों की तैयारी कर रहा था। साथ ही हमास की सैन्य ताकत फिर से बढ़ाने में जुटा था। समीर अबू यूनिस को अबू महमूद के नाम से भी जाना जाता था। उसने 15 सितंबर 2026 को राफा ब्रिगेड की कमान संभाली थी। गाजा में हमास के कमांडरों को निशाना बना रहा इजराइल:- इजराइल इन दिनों गाजा में हमास के उन लड़ाकों और कमांडरों को निशाना बना रहा है, जिन पर 7 अक्टूबर के हमले में शामिल होने या हमास की सैन्य ताकत बढ़ाने का आरोप है। गुरुवार को भी इजराइली सेना ने खान यूनिस के नासिर अस्पताल परिसर पर हमला किया था। इसमें हमास की खान यूनिस ब्रिगेड के कमांडर मुहम्मद अबू इस्माइल को निशाना बनाया गया था। हालांकि, उसकी मौत की पुष्टि नहीं हुई है। हमास की राफा ब्रिगेड के तीन कमांडर मारे गए:-जंग शुरू होने के बाद से समीर अबू यूनिस समेत राफा ब्रिगेड के तीन कमांडर मारे जा चुके हैं। 13 मई 2025: राफा ब्रिगेड का कमांडर मुहम्मद शबाना इजराइली हवाई हमले में मारा गया। यह हमला खान यूनिस अस्पताल के नीचे बने एक ठिकाने को निशाना बनाकर किया गया था। इसी हमले में हमास के बड़े नेता मोहम्मद सिनवर की भी मौत हुई थी। 15 सितंबर 2026: शबाना की मौत के बाद नाएल अबू ओबैद ने राफा ब्रिगेड की कमान संभाली थी। इजराइल ने उसे भी खान यूनिस में हवाई हमले के जरिए मार गिराया। इजराइली सेना के मुताबिक, वह हमास का बड़ा कमांडर था और संगठन की सैन्य ताकत दोबारा बढ़ाने में जुटा था। 2026 में मारे गए हमास से जुड़े लोग:- 15 मई 2026, इज्ज अल-दीन अल-हद्दाद: हमास की सैन्य शाखा का प्रमुख था। इजराइल के मुताबिक, उसने 7 अक्टूबर के हमले की योजना बनाने और उसे अंजाम देने में अहम भूमिका निभाई थी। गाजा सिटी में इजराइली हवाई हमले में उसकी मौत हुई।26 मई 2026, मोहम्मद ओदेह: हमास की सैन्य खुफिया इकाई का प्रमुख था। इजराइली सेना के मुताबिक, उसने 7 अक्टूबर के हमले के दौरान इजराइल में घुसने और ठिकानों को निशाना बनाने की योजना तैयार करने में मदद की थी।आगे की खबर पेज संख्या 07 पर...

पाक सेना का बागी बलूच लिबरेशन आर्मी का चीफ,फिदायीन मजीद ब्रिगेड को ट्रेनिंग दी

2025 में पाकिस्तान ने कहा था- हमले में मारा गया

क्वेटा। बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) ने पाकिस्तानी सेना के पूर्व कैप्टन रहमान गुल को अपना नया कमांडर इन-चीफ



नियुक्त किया है। बीएलए ने शनिवार को यह जानकारी दी। रहमान गुल ने 8 साल तक पाकिस्तानी सेना में नौकरी की थी। इसके बाद बलूचिस्तान में पाकिस्तानी सेना की बर्बरता देखने के बाद उसने बगावत की। 2010 में वह बीएलए में शामिल हुआ। फिदायीन हमले करने वाली मजीद ब्रिगेड को ट्रेनिंग देने में रहमान की अहम भूमिका है।2025 को पाकिस्तानी मीडिया ने सूत्रों के हवाले से बताया था कि वह अफगानिस्तान के हेलमंद में मारा गया। पेशावर यूनिवर्सिटी से पढ़ाई के बाद पाकिस्तानी सेना जॉइन की थी:-रहमान गुल को उस्ताद मुरीद और मुरीद बलोच के नाम से भी जाना जाता है। जन्म 14 अगस्त 1984 को पाकिस्तान के बलूचिस्तान के नोशकी इलाके में हुआ था। वह मेंगल समुदाय के एक प्रभावशाली परिवार से आता है। उसने शुरुआती पढ़ाई नोशकी में की और आगे की पढ़ाई के लिए क्वेटा गया। इसके बाद पेशावर यूनिवर्सिटी से बीए की डिग्री हासिल की। पढ़ाई पूरी करने के बाद उसने पाकिस्तानी सेना जॉइन कर ली। साल 2002 में वह सेना में भर्ती हुआ था। उसने काकुल स्थित पाकिस्तान मिलिट्री एकेडमी में दो साल की ट्रेनिंग ली। इसके बाद उसे 19वीं फ्रंटियर फोर्स रेजिमेंट में तैनात किया गया था। पाकिस्तान सरकार ने 10 लाख रुपए का इनाम रखा था:-रहमान गुल का नाम पाकिस्तान की फेडरल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (एफआईए) की वांटेड लिस्ट में भी शामिल है। एजेंसी के दस्तावेज में उसे कैप्टन रहमान गुल उर्फ उस्ताद मुरीद के नाम से दर्ज किया गया है। उसकी जानकारी देने वाले के लिए 10 लाख पाकिस्तानी रुपए तक के इनाम का जिक्र है। उसके खिलाफ कई एफआईआर भी दर्ज हैं। चीनी इंजीनियरों पर हमले के मामले में भी शामिल:-6 अक्टूबर 2024 को पाकिस्तान के कराची में चीनी नागरिकों के काफिले पर आत्मघाती हमला हुआ था। इस हमले में 3 लोगों की मौत हुई थी, जिनमें 2 चीनी इंजीनियर शामिल थे। जेम्सटाउन फाउंडेशन की रिपोर्ट के मुताबिक, इस हमले की जांच के दौरान पाकिस्तानी एजेंसियों ने रहमान गुल का नाम भी एफआईआर में दर्ज किया था। रहमान गुल का चीफ बनना बीएलए की बड़ी रणनीतिक चाल:- रहमान गुल को कमांडर इन-चीफ बनाना बीएलए की बड़ी रणनीतिक चाल माना जा रहा है।आगे की खबर पेज संख्या 07 पर...

यमन में हूतियों के सामने पीछे हटी सेना,बाब अल-मंदेब स्ट्रेट के पास खास इलाका छोड़ा

विद्रोहियों को खदेड़ने के लिए सरकार मांग रही मदद

सना। यमन में हूती विद्रोहियों के सामने सरकार की सेना कमजोर पड़ रही है। रॉयटर्स के मुताबिक सेना ने



रविवार को धुबाब एयरपोर्ट के पास के इलाके से अपनी टुकड़ियां हटा लीं। यह बाब अल-मंदेब स्ट्रेट के बेहद करीब है। इसका इस्तेमाल सैन्य गतिविधियों के लिए होता था। इस इलाके में अब हूतियों का नियंत्रण हो गया है। यमन की सरकार ने हूतियों को यहां से हटाने के लिए दूसरे देशों से मदद मांगी है। सेना को अदन और आसपास के दक्षिणी इलाकों की ओर भेजा जा रहा है। यह कदम अदन और पड़ोसी इलाकों की सुरक्षा के लिए उठाया गया है। यमन की अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त सरकार की सेना के प्रवक्ता कर्नल माजिद अल-नुजैली ने दूसरे देशों से मदद की अपील की है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा कि बाब अल-मंदेब और यमन के पश्चिमी तट को हूतियों से आजाद कराना यमनी सेना का अधिकार है। उन्होंने दक्षिणी सेना की तारीफ करते हुए कहा कि वह अंतरिम राजधानी अदन और आसपास के इलाकों की सुरक्षा कर रही है। साथ ही ताइज शहर की घेराबंदी खत्म करने की कोशिश कर रही है। अल-नुजैली ने कहा कि ताइज को हूतियों की घेराबंदी से बाहर निकालना देश की बड़ी जिम्मेदारी है। हूती विद्रोहियों के कब्जे वाली अहम जगह:-मोखा: लाल सागर के तट पर बसा अहम बंदरगाह शहर। हूतियों ने 10 सितंबर को इस पर कब्जा किया था। धुबाब: बाब अल-मंदेब के पास यमन का तटीय इलाका। हूतियों ने सितंबर में यहां प्रवेश किया था। 5 अक्टूबर को सरकारी सेना ने इसे वापस लेने का दावा किया, लेकिन 15 नवंबर को सेना फिर यहां से पीछे हट गई। पेरिम द्वीप: बाब अल-मंदेब के बीच स्थित रणनीतिक द्वीप। सितंबर में सरकारी सेना के हटने के बाद हूतियों ने यहां पहुंचकर अपनी पकड़ बनाई। ताइज के आसपास के कुछ इलाके: हूतियों ने शहर के आसपास पहाड़ी रास्तों और कुछ मोर्चों पर बढ़त बनाई है। ताइज शहर की घेराबंदी भी जारी है।











(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। दिनांक-16.11.2026 को पुलिस उपायुक्त यमुनानगर द्वारा छठ पर्व को सकुशल सम्पन्न कराए जाने के दृष्टिगत थाना नैनी अंतर्गत अरैल छठ घाट का स्थलीय निरीक्षण कर श्रद्धालुओं की सुविधा व सुरक्षा हेतु किए गए पुलिस प्रबंध, सुगम यातायात व्यवस्था एवं अन्य व्यवस्थापन का जायजा लिया गया।

पानी में खड़े होकर उगते हुए भगवान सूर्य को दिया अर्घ्य

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। आस्था के महापर्व छठ पूजा का आज चौथा और अंतिम दिन है। सुबह-सुबह ढोल-नगाड़ों की गूंज और पारंपरिक छठ गीतों के बीच व्रती महिलाएं और उनके परिवार के सदस्य यमुना घाट पहुंचे। जहां व्रती महिलाओं ने हल्की ठंड और आस्था के बीच, कमर तक पानी में खड़े होकर उगते हुए भगवान सूर्य को अर्घ्य दिया और परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की। साथ ही सूर्य को अर्घ्य देने के बाद व्रती महिलाओं ने विधि-विधान से पारण किया और इसी के साथ चार दिवसीय इस महापर्व का समापन हो गया। छठ पूजा के दौरान उमड़ी भारी भीड़ को ध्यान में रखते हुए सुरक्षा के कड़े और विशेष इंतजाम किए गए थे,

ताकि सभी श्रद्धालु शांतिपूर्ण तरीके से अपना व्रत पूरा कर सकें और

सुरक्षित अपने गंतव्य को जा सकें।



छठ पूजा पर मातृभूमि सेवा मिशन ने किया फल वितरण,विभाग प्रचारक अमित जी एवं थाना प्रभारी राकेश चंद्र आनंद ने किया शुभारंभ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। छठ पूजा के पावन अवसर पर मातृभूमि सेवा मिशन धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र रायबरेली इकाई की ओर से शहीद स्मारक स्थित सई नदी तट के पुराने पुल पर फल वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रायबरेली विभाग प्रचारक अमित जी मुख्य अतिथि तथा थाना प्रभारी राकेश चंद्र आनंद विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। थाना प्रभारी ने फल वितरण कार्यक्रम का शुभारंभ किया।मिशन के संयोजक प्रदीप पांडेय ने कहा कि छठ पर्व आस्था, श्रद्धा और सामाजिक एकता का प्रतीक है। ऐसे पावन अवसर पर श्रद्धालुओं की सेवा करना आत्मिक संतोष का विषय है। उन्होंने सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया। मिशन अध्यक्ष रामराज गिरी ने कहा कि समाज के प्रत्येक वर्ग के साथ जुड़कर सकारात्मक और रचनात्मक कार्य करना मिशन का उद्देश्य हैं। सभी सदस्यों का समर्पण संगठन की शक्ति है। संरक्षक महेंद्र अग्रवाल ने कहा कि ऐसे सेवा कार्य समाज में सहयोग और सद्भाव की भावना को मजबूत करते हैं। मंडल अध्यक्ष भागवत प्रताप सिंह ने कहा कि सामाजिक और धार्मिक अवसरों पर इस प्रकार के आयोजन समाज में आपसी जुड़ाव और सहयोग की भावना को बढ़ाते हैं। कार्यक्रम में युवा प्रभारी डॉ. सचिन की सक्रिय भूमिका विशेष रूप से सराहनीय रही। सामाजिक कार्यों के प्रति उनका समर्पण और जिम्मेदारी के साथ सहभागिता मिशन की गतिविधियों को मजबूती प्रदान करती है। मुख्य योग शिक्षक अनूप शर्मा ने भी आयोजन में विशेष सहयोग किया। अमेरिका से पधारीं माता तुल्य आदरणीय शशिकला जी का विशेष सानिध्य प्राप्त हुआ।

वे कुशल योग शिक्षिका हैं तथा समय-समय पर मिशन से जुड़कर योग प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन प्रदान करती रहती हैं। कार्यक्रम में संरक्षक महेंद्र अग्रवाल, अजय मिश्रा, दिनेश पांडेय, विधिक सलाहकार अजय पाल, महामंत्री देवेंद्र नाथ मिश्रा, पूर्व योग शिक्षक बृजमोहन, मुख्य योग शिक्षक अनूप शर्मा, शिवांशी पांडेय, सहसंयोजक रामानुज मिश्रा, बी.बी. सिंह, गुड्डू, अमित, वीरेंद्र, आशीष यादव, शिवेंद्र, सत्यप्रकाश, अतुल पांडेय, सुमन, रश्मि पांडेय, शिवचंद्र पांडेय एवं पतंजलि योग समिति के जिला प्रभारी प्रकाश नारायण पाठक सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।





डीएम की अध्यक्षता में बीएलओ एवं बीएलओ सुपरवाइजर्स को दिया गया प्रशिक्षण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों के क्रम में अर्हता तिथि 01 जनवरी 2027 के आधार पर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की निर्वाचक नामावलियों का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इसी क्रम में सभी छह विधानसभा



निर्वाचन क्षेत्रों की निर्वाचक नामावलियों के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम को प्रभावी एवं सुव्यवस्थित ढंग से सम्पन्न कराने के उद्देश्य से जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में राना बेनी माधव बक्श सिंह ऑडिटोरियम में बीएलओ एवं बीएलओ सुपरवाइजर्स को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के दौरान विशेष संक्षिप्त



पुनरीक्षण से संबंधित विभिन्न कार्यवाहियों, निर्वाचन से जुड़े अधिनियमों एवं नियमों, ईसीआईनेट, बीएलओ ऐप सहित निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित अन्य महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं की विस्तृत जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में बीएलओ एवं बीएलओ सुपरवाइजर्स को उनके दायित्वों, कार्यप्रणाली तथा निर्वाचक नामावलियों के पुनरीक्षण के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों से अवगत कराया गया, ताकि पुनरीक्षण कार्य को पूरी पारदर्शिता, निष्पक्षता एवं निर्धारित समय-सीमा के भीतर सम्पन्न कराया जा सके। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मतदेय स्थलों के सम्भाजन के उपरान्त अर्हता तिथि 01 जनवरी 2027 के आधार पर जनपद के सभी छह विधानसभा क्षेत्र 182-सरेनी एवं 183-ऊँचाहार तथा तृतीय पाली में विधानसभा क्षेत्र 177-बछरावां (अ0जा0) एवं 181-सलोन (अ0जा0) के बीएलओ एवं बीएलओ सुपरवाइजर्स को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जिलाधिकारी ने निर्वाचन संबंधी सभी कार्यों को गंभीरता एवं जिम्मेदारी के साथ संपादित करने पर बल देते हुए कहा कि निर्वाचक नामावलियों का शुद्ध, पारदर्शी एवं अद्यतन होना स्वतंत्र एवं निष्पक्ष निर्वाचन की महत्वपूर्ण आधारशिला है। अतः सभी संबंधित कार्मिक आयोग के दिशा-निर्देशों का भली-भांति अनुपालन करते हुए अपने दायित्वों का निर्वहन सुनिश्चित करें। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी श्याममणि त्रिपाठी, जिला सूचना विज्ञान अधिकारी ब्रजेश तिवारी सहित सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहें।

डीएम ने हरी झण्डी दिखाकर रैली को किया रवाना,जनगणना-2027 के तहत स्वगणना के प्रति जनजागरूकता का संदेश लेकर निकली भव्य बाइक रैली

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। भारत की



जनगणना-2027 के अंतर्गत आम जनमानस को स्वगणना के प्रति जागरूक करने एवं अधिक से अधिक लोगों को स्वगणना प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से आज जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने कलेक्ट्रेट सभागार से स्वगणना जागरूकता बाइक रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। इस जागरूकता रैली में बेसिक शिक्षा विभाग एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। रैली में लगभग 500 बाइक सम्मिलित रहीं। रैली के माध्यम से जनसामान्य को जनगणना-2027 के अंतर्गत स्वगणना के महत्व एवं इसकी उपयोगिता के प्रति जागरूक करते हुए अधिकाधिक सहभागिता का संदेश दिया गया। बाइक रैली कलेक्ट्रेट परिसर से प्रारम्भ होकर सिविल लाइन चौराहा, गोल चौराहा, रतापुर चौराहा, त्रिपुला चौराहा होते हुए जहानाबाद चौकी बस स्टॉप से गुजरकर राजकीय इंटर कॉलेज के मैदान में पहुंची, जहां रैली का समापन हुआ। रैली के दौरान प्रतिभागियों ने आमजन को स्वगणना के प्रति जागरूक एवं प्रोत्साहित किया। रैली के समापन के उपरान्त मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता ने उपस्थित अधिकारियों, कर्मचारियों एवं प्रतिभागियों को स्वगणना करने की शपथ दिलाई। उन्होंने जनगणना-2027 के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जनगणना एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्य है। इसमें प्रत्येक नागरिक की सहभागिता आवश्यक है। स्वगणना के माध्यम से नागरिक स्वयं अपनी एवं अपने परिवार की जानकारी दर्ज कर सकते हैं। उन्होंने सभी से अपील की कि वे स्वगणना प्रक्रिया में बढ़-चढ़कर भाग लें तथा अपने परिवार, आस-पड़ोस एवं अन्य लोगों को भी इसके प्रति जागरूक करें, जिससे जनगणना का कार्य अधिक प्रभावी एवं सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सके। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) सहदेव मिश्र, आशुतोष तिवारी सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

आस्था का महाकुंभः सेक्टर-105, नोएडा में लोकआस्था के महापर्व छठ का अलौकिक और भव्य समापन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। आरडब्ल्यूए के अध्यक्ष दिव्य कृष्णात्रेय की करबद्ध उपस्थिति और आत्मीय सहभागिता के बीच, जब संध्या की ठंडी बयार के बीच गन्ने के मंडप तले हाथों में सूप थामे, व्रतियों की नम आँखों में डूबते सूरज की लाली उतरी, और आज उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ ही जब यह पावन महापर्व पूर्ण हुआ, तो ऐसा लगा मानो यह दृश्य केवल एक अनुष्ठान नहीं, बल्कि इस धरा पर ईश्वर से सीधे संवाद का सबसे पवित्र क्षण था। इस महाव्रत की सबसे बड़ी खूबसूरती यही है कि यह दुनिया की उस रीत को झुठला देता है जहाँ हमेशा उगते सूरज को ही पूजा जाता है; यह वह महा-साधना है जहाँ अपनी हर पीड़ा और थकान को भुलाकर ढलते और उगते दोनों रूपों में भगवान भास्कर को साष्टांग प्रणाम कर कृतज्ञता व्यक्त की जाती है। यह अनुपम पर्व हमें सिखाता है कि जीवन के सबसे गहरे अंधकारों और झंझावातों के बीच भी यदि भीतर आस्था का दिया जल रहा है, तो कोई भी रात इतनी लंबी नहीं होती कि सुबह का सूरज न ला सके। इसी हृदयस्पर्शी और अलौकिक संस्कृति की खुशबू से सराबोर होकर सेक्टर-105 कम्युनिटी सेंटर का प्रांगण इन दिनों किसी भव्य तीर्थ से कम नहीं लग रहा था, जहाँ आज सुबह उदीयमान सूर्य को अर्घ्य अर्पित करने के साथ ही



यह अनुष्ठान पूर्ण हुआ। आरडब्ल्यूए कार्यकारिणी समिति एवं छठ पूजा समिति, सेक्टर-105 के संयुक्त आत्मीय प्रयासों से आयोजित इस महापर्व में 15 नवंबर की शाम को अस्ताचलगामी सूर्य को और आज 16 नवंबर की प्रातः 5:00 बजे से उदीयमान सूर्य को अर्पित किए गए अर्घ्यों ने मानो पूरे वातावरण को ही अमर कर दिया। गूँजते हुए पारंपरिक लोकगीत, छठी मैया के मधुर भजन, और भक्तों के बीच बँटता वह पावन महाप्रसाद – इन सबने मिलकर पूरे सेक्टर को एक विशाल, समृद्ध और अटूट परिवार में बदल दिया, जहाँ हर दिल एक ही लय में धड़कता नजर आया।?इस अवसर पर हृदय से भावुक होते हुए आरडब्ल्यूए अध्यक्ष दिव्य कृष्णात्रेय ने अपने संदेश में कहा कि इन व्रतियों और तपस्वियों का यह असीम समर्पण ही वह पवित्र ऊर्जा है जो हमारे पूरे सेक्टर को एक परिवार की तरह जीवंत, प्रेममय और जाग्रत रखती है। इस दिव्य आयोजन को पूर्णता और अपनेपन का शिखर देने वाले आर0 डबल्यू0 ए0 कोषाध्यक्ष श्री सुरेश बंसल जी, श्री महेश चौहान तथा छठ पूजा समिति के समर्पित स्तंभों– श्री परमानंद पांडे जी, श्री प्रभात रंजन, इंद्रजीत पांडे, अभिषेक पांडे और विवेक पांडे जी के साथ-साथ समस्त समिति सदस्यों ने एक स्वर में कहा कि यह आयोजन किसी एक समिति का नहीं, बल्कि यहाँ रहने वाले हर एक परिवार की आस्था का जीता-जागता हस्ताक्षर है।आरडब्ल्यूए कार्यकारिणी समिति एवं छठ पूजा समिति, सेक्टर-105, नोएडा समस्त क्षेत्रवासियों का सपरिवार अभिनंदन करते हुए छठी मैया और भगवान भास्कर से यही प्रार्थना करती है कि आज इस पावन पर्व के पूर्ण होने के साथ ही आप सभी के जीवन में सुख, शांति, आरोग्य और असीम समृद्धि का ऐसा प्रकाश फैले जो कभी फीका न पड़े।

18 नवंबर के धरना-प्रदर्शन की तैयारियों को लेकर उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ की बैठक संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)



रायबरेली। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के प्रांतीय आह्वान पर आगामी 18 नवंबर को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय पर प्रस्तावित धरना-प्रदर्शन की तैयारियों के क्रम में आज संगठन की एक महत्वपूर्ण बैठक उच्च प्राथमिक विद्यालय चक अहमदपुर नजूल में जिलाध्यक्ष राजेश शुक्ला की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में धरना-प्रदर्शन को सफल एवं प्रभावी बनाने के लिए विस्तृत चर्चा की गई। जिलाध्यक्ष राजेश शुक्ला ने सभी पदाधिकारियों से अपने-अपने विकास क्षेत्रों में शिक्षकों से संपर्क कर अधिकाधिक संख्या में धरना-प्रदर्शन में सहभागिता सुनिश्चित कराने की अपील की। जिला संघर्ष समिति अध्यक्ष पंकज द्विवेदी ने कहा कि शिक्षक हितों की रक्षा एवं न्यायोचित मांगों को लेकर संगठन पूरी मजबूती और एकजुटता के साथ संघर्षरत है। जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेश यादव और जिला कोषाध्यक्ष सुधीर सिंह ने कहा कि 18 नवंबर का धरना शिक्षकों की एकजुटता और संगठनात्मक शक्ति का परिचायक बनेगा। बैठक में जिला संयुक्त मंत्री डॉ. चंद्रमणि बाजपेयी, जिला उपाध्यक्ष बृजकिशोर चौधरी एवं अनुराग शुक्ला, सरेनी अध्यक्ष राकेश द्विवेदी, हरचंदपुर अध्यक्ष अरविंद द्विवेदी, रोहनियां अध्यक्ष पवन शुक्ल, जगतपुर अध्यक्ष संजय सिंह, डलमऊ अध्यक्ष कीर्ति मनोहर शुक्ला, खीरों अध्यक्ष नीरज हंस, अमावां अध्यक्ष दयाशंकर तिवारी, सतांव मंत्री सुधीर द्विवेदी, राही मंत्री दिलीप गुप्ता, महाराजगंज मंत्री सगीर अहमद, सतांव संयुक्त मंत्री अवध किशोर शुक्ला, डलमऊ संघर्ष समिति अध्यक्ष अनुज त्रिवेदी, डलमऊ ब्लॉक उपाध्यक्ष दुर्गेश मिश्रा, अमावां कोषाध्यक्ष विश्वनाथ, अमावां संयुक्त मंत्री रमाकांत तिवारी एवं रोहनियां संघर्ष समिति अध्यक्ष सुशील कुमार सहित अनेक पदाधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में सभी पदाधिकारियों ने संकल्प लिया कि 18 नवंबर को शिक्षक एकजुटता का व्यापक प्रदर्शन करते हुए धरना-प्रदर्शन को ऐतिहासिक रूप से सफल बनाया जाएगा।

छठ महापर्व पर श्रद्धालुओं की सेवा में जुटे भाजपा क्षेत्रीय उपाध्यक्ष दिनेश सिंह राठौर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। छठ महापर्व के पावन अवसर सईं नदी राजघाट एवं सई नदी शहीद स्मारक के तट पर श्रद्धालुओं की सेवा के उद्देश्य से भाजपा क्षेत्रीय उपाध्यक्ष दिनेश सिंह राठौर द्वारा चाय सेवा शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान छठ व्रतियों एवं श्रद्धालुओं को चाय वितरित कर उनका स्वागत एवं सेवा की गई। दिनेश सिंह राठौर ने कहा



कि छठ महापर्व आस्था, पवित्रता, लोक संस्कृति और सूर्य उपासना का महान पर्व है। इस पावन अवसर पर श्रद्धालुओं की सेवा करना सौभाग्य और आत्मिक संतोष का विषय है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं को छठ महापर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए छठी मईया एवं भगवान सूर्यदेव से सभी के सुख, समृद्धि और खुशहाली की कामना की। सेवा ही संकल्प है, सेवा ही संस्कार है।

पाकेट-7 के जिम पार्क में धूमधाम से मनाया गया 11वां छठ महापर्व-सैकड़ों छठव्रतियों ने किया पूजन-अर्चन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर-82 स्थित पाकेट-



7 के जिम पार्क में 11वें छठ पूजा महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर सैकड़ों छठव्रतियों ने पूरे श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ भगवान सूर्यदेव एवं छठी मैया की पूजा-अर्चना की तथा परिवार और समाज की सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। निःशुल्क छठ पूजा समिति के अध्यक्ष अमितेश कुमार ने छठ पूजा महोत्सव के आयोजन के संबंध में विस्तार से जानकारी दी।

उन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी पुलिसकर्मियों, मीडिया कर्मियों एवं उपस्थित जनसमूह का आभार व्यक्त करते हुए सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।उन्होंने कहा कि सभी के सहयोग और सहभागिता से छठ महापर्व का आयोजन श्रद्धा, उत्साह और उल्लास के साथ संपन्न हुआ।

बाल दिवस पर अनाथ आश्रम के बच्चे आउटस्टैंडिंग टैलेंट अवार्ड से सम्मानित,विभिन्न क्षेत्रों की चार विभूतियों को मिला विशेष सम्मान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। 'साहित्य वेलफेयर कल्चरल एंड स्पोर्ट्स फेडरेशन' एवं 'शब्दावली दर्पण न्यूज़' के संयुक्त बैनर तले वरिष्ठ साहित्यकार एवं पूर्व अधिकारी डॉ0 देवव्रत शर्मा 'अयन' की अध्यक्षता व मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार आनंद क्रांति वर्धन तथा नूतन अग्रवाल के उत्कृष्ट मंच संचालन में बरोला सेक्टर 49 नोएडा स्थित साहित्य सदन के 'साहित्यम् मंडपम' में बाल



दिवस के अवसर पर एक भव्य शब्दावली कवि सम्मेलन व सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। देर रात तक चले इस कार्यक्रम में गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में 'चार दिशाएं' के चीफ़ एडिटर राजकुमार शर्मा की महत्वपूर्ण उपस्थिति रही। विशिष्ट अतिथि की भूमिका में बेंगलुरु से पधारी साहित्यकार रीता सिंह, यू के भारद्वाज, किशोर श्रीवास्तव रहे। कार्यक्रम का संयोजन अयोध्या की कवित्री व फेडरेशन की उपाध्यक्ष किरन सिंह 'किरण' द्वारा किया गया। आयोजन में अनाथ आश्रम के मेधावी बच्चों को मोमेंटो, प्रशस्ति प्रमाण पत्र, मेडल, उपहार देकर 'आउटस्टैंडिंग टैलेंट अवार्ड' से विधिवत् सम्मानित किया गया। इस मौके पर विभिन्न क्षेत्रों में जनहित में विशेष एवं सराहनीय कार्य करने वाले चार विभूतियों को भी सम्मानित किया गया। समाज सेवा के लिए डॉक्टर शेखर विश्वास एवं डॉक्टर सोनाली कटारिया, भारतीय संस्कृति के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नृत्यांगना गुरु अनुराधा शर्मा, साहित्यिक क्षेत्र में प्रबुद्ध साहित्यकार डॉ0 विक्रम गौड़ 'रसिक' को उनके विशेष योगदान के लिए विधिवत् सम्मानित किया गया। इस मौके पर बच्चों की प्रतिभा का प्रदर्शन/प्रस्तुति देखते ही पूरा सभागार मंत्र मुग्ध हो गया।

अतिथियों के साथ-साथ



सभी ने बच्चों के टैलेंट की मुक्त कंठ से भूरी भूरी प्रशंसा की। कविताओं का दौर बखूबी चला, जिसमें मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, भिवानी- हरियाणा, आगरा के साथ-साथ एनसीआर के लगभग तीन दर्ज़न कलमकारों द्वारा विभिन्न विधाओं पर आधारित रचनाओं की शानदार प्रस्तुति दी गई।सभागार में उपस्थित सभी श्रोताओं की तालियों की गड़गड़ाहट इस आयोजन को सफलता का प्रमाण पत्र दे रही थी। विगत 26 वर्षों से निरंतर आयोजन करते आ रहे कार्यक्रम के आयोजक फेडरेशन के चेयरपर्सन, पूर्व राजपत्रित अधिकारी, भारत सरकार से सम्मानित कवि व लेखक पं0 साहित्य चंचल 'साधक' ने भविष्य में भी समाज एवं साहित्य हित में कार्य करने की प्रतिबद्धता जताते हुए सभागार में उपस्थित सभी लोगों का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

सपा ने मनाई वीरांगना उदा देवी पासी की पुण्यतिथि

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम



की वीरांगना उदा देवी पासी की पुण्यतिथि समाजवादी पार्टी नोएडा महानगर द्वारा मनाई गई। इस अवसर पर महानगर अध्यक्ष डॉ आश्रय गुप्ता ने सपा नेताओं के साथ उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर महानगर अध्यक्ष डॉ आश्रय गुप्ता ने कहा कि 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक प्रमुख वीरांगना थीं। वे पासी समुदाय से थीं और लखनऊ क्षेत्र में बेगम हजरत महल के महिला सैन्य दस्ते की सदस्य रहीं। उनका विवाह मक्का पासी से हुआ था जो अवध के नवाब वाजिद अली शाह की सेना में सैनिक थे। पूर्व महासचिव राघवेंद्र दुबे ने कहा कि उदा देवी स्वयं नवाब की बेगम हजरत महल के महिला सुरक्षा दस्ते से जुड़ीं थीं। उनकी बहादुरी और योग्यता को देखते हुए उन्हें सैन्य प्रशिक्षण दिया गया। 16 नवंबर 1857 को लखनऊ के सिकंदर बाग पर ब्रिटिश सेना ने हमला किया। जब कई सैनिक मारे गए तब उदा देवी ने पेड़ पर चढ़कर अंग्रेज सैनिकों पर सटीक निशाना साधकर 36 ब्रिटिश सैनिकों को मार गिराया। एक गोली उदा देवी को लगी और वह 27 वर्ष की उम्र में शहीद हो गईं। विधानसभा अध्यक्ष बबलू चौहान ने कहा कि उनकी वीर गाथा सदियों तक हिंदुस्तान याद रखेगा। उन्होंने देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया ।

इस मौके पर महानगर अध्यक्ष डॉ आश्रय गुप्ता, पूर्व प्रत्याशी सुनील चौधरी, पूर्व महासचिव राघवेंद्र दुबे, विधानसभा अध्यक्ष बबलू चौहान, पूर्व जिला महासचिव विनोद यादव , कृपा शंकर , वीरपाल प्रधान , जितेंद्र कुमार , उत्कर्ष वर्मा, पिंटू सिंह, ललित कश्यप , लोकपाल यादव सहित तमाम सपा नेता मौजूद रहे।

सेक्टर 82 में उगते सूरज को अर्घ्य दिया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। छठ पूजा समिति के अध्यक्ष शैलेन्द्र कुमार मिश्रा सेंट्रल पार्क पॉकेट -7 सेक्टर 82



नोएडा छठ घाट में अर्घ्य दिया और उन्होंने कहा कि अर्घ्य देते समय सूर्य देवता दूध, जल आदि अर्पित किया जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, अर्घ्य देने से कुंडली में सूर्य की कमजोर स्थिति मजबूत होती है. सौभाग्य बना रहता है. मान-सम्मान में भी वृद्धि होती है. यश और कीर्ति में इजाफा होता है. घर-परिवार में सुख-शांति का वातावरण रहता है. सूर्य देवता की कृपा बनी रहती है. छठी मैया निःसंतान को संतान सुख का आशीर्वाद देती हैं.बाद छठ पूजा का समापन हो जाएगा। उदयगामी सूर्य को अर्घ्य देने के बाद व्रती छठ पूजा के व्रत का पारण कर अपना उपवास तो इते हैं।'स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यम् रूपं हि मण्डलमृचोथ तनुर्यजूंषि। सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम्।।'

मंत्र का जाप करें। ओम सूर्यायनमः का भी उच्चारण कर सकते हैं. व्रती यदि सही तरीके और पूरे विधि-विधान से पूजा करें तो सुख-समृद्धि आती है।ओम ऐही सूर्यदेव सहस्त्रांशो तेजो राशि जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहणार्घ्यं दिवाकरः।। ऊँ सूर्याय नमः, ऊँ आदित्याय नमः, ऊँ नसमिति के अध्यक्ष शैलेन्द्र कुमार मिश्रा ने नोएडा प्राधिकरण ,नोएडा पुलिस ,नोएडा प्रिंट मीडया सेक्टर -82 पॉकेट -7 वासियो एवं समिति के समस्त पदाधिकारियो का आभार व्यक्त किया और धन्यवाद दिया जिनके सहयोग से चार दिवसीय छठ पूजा का सफल आयोजन रहा इस अवसर पर संस्था के सदस्य शैलेन्द्र मिश्रा ,पप्पू सिंह ,अमरेश झा ,रामभरोष झा ,संतोष यादव ,जीतेन्द्र सिंह ,विजय कुमार, अंगद सिंह तोमर,हंस मणि शुक्ल,झा ,बलराम कर्ण , संगम प्रसाद मिश्र,किशुन जी झा ,दिलीप राइ ,गोरे लाल ,मुरारी झा ,शिवा चौधरी ,संजय पांडेय के .के .झा ,अनूप सिंह ,हरी शंकर सिंह ,अशोक दास ,विजेंद्र सिंह ,रुपेश झा ,संटू मिश्रा , ,अजित मिश्रा ,अजय झा ,शंकर झा ,प्रकाश झा ,आनंद मिश्रा ,देव मणि शुकल , राकेश कुमार,रवि राघव , पंकज मिश्रा, रमेश कुमार वर्मा, रमेश चंद्र दास, सर्वेश तिवारी,एस .के .तिवारी , ,राम बाबू चौधरी ,मनोज झा ,गोविन्द मिश्रा ,अरविन्द सिंह , ,अंजनी सिंह , ,आशीष मिश्रा ,सुबोध सिंह ,कालू सिंह , ,मनीष पांडेय ,राघवेंद्र चौधरी , ,अटल बिहारी गुप्ता ,एस ,के पांडेय ,राहुल कुमार ,एस के रथ , ,देवेंद्र गुप्ता ,सत्शंकर दास मुकेश मिश्रा अभिनाश नंदन शर्मा संजय कुमार झा ,विनोद राजपूत , आदित्य जी ,देवेंद्र गुप्ता ,हनुमान जी ,विष्णु कुमार शर्मा ,तिमिर वि दान ,नीरज शर्मा ,, दिनेश शुक्ला ,नन्द कुमार चौहान ,दिवाकान्त झा , प्रेमचंद्र झा ,संतोष मिश्रा ,उपेंद्र यादव ,प्रकाश सिन्हा ,अशोक राइ,मनोज झा ,मनोज लड्डू बाबू ,पवन ,धनञ्जय सिंह ,संतोष झा ,प्रकाश झा ,अजय सिंह ,कुंदन पाठक ,हिमांशु ,अबधेश सिंह ,रमेश वर्मा काफी लोग उपस्थित हुए आज उगते सूर्य को अर्घ्य दिए।

राज्य स्तरीय सब-जूनियर बालिका कबड्डी प्रतियोगिता में आगरा छात्रावास बना विजेता, आगरा मंडल उपविजेता-जिलाधिकारी ने किया खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। खेल निदेशालय, उत्तर प्रदेश, लखनऊ के तत्वावधान में जिला खेल कार्यालय, रायबरेली द्वारा 14 से 16 नवम्बर 2026 तक आयोजित प्रदेश स्तरीय समन्वय सब-जूनियर बालिका कबड्डी प्रतियोगिता का आज भव्य समापन हुआ। प्रतियोगिता में प्रदेश के 16 मंडलों एवं आगरा छात्रावास सहित कुल 17 टीमों के 248 बालिका खिलाड़ियों ने प्रतिभाग कर अपनी खेल प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के अंतिम दिन खेले गए लीग मुकाबलों में वाराणसी मंडल ने अलीगढ़ मंडल को 29-20 से पराजित किया। आगरा मंडल ने मिर्जापुर मंडल को 45-43 से हराया। आगरा छात्रावास ने आजमगढ़ मंडल को 41-33 से शिकस्त दी, जबकि प्रयागराज मंडल ने मेरठ मंडल को 29-15 से पराजित किया।सेमीफाइनल मुकाबलों में आगरा मंडल ने वाराणसी मंडल को 37-27 से पराजित कर फाइनल में प्रवेश किया। वहीं दूसरे सेमीफाइनल में आगरा छात्रावास ने प्रयागराज मंडल को 34-27 से हराकर फाइनल में अपनी जगह सुनिश्चित की।फाइनल मुकाबला आगरा मंडल एवं आगरा छात्रावास के मध्य खेला गया, जिसमें आगरा छात्रावास की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए आगरा मंडल को 43-27 से पराजित कर प्रतियोगिता का विजेता बनने का गौरव प्राप्त किया। आगरा मंडल उपविजेता रहा।फाइनल मुकाबला जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। जिलाधिकारी ने खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं खेल कौशल की सराहना करते हुए उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि खेल बालिकाओं में आत्मविश्वास, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता एवं शारीरिक दक्षता विकसित करने का सशक्त माध्यम है। उन्होंने खिलाड़ियों को खेल के प्रति समर्पित रहने तथा भविष्य में और बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया।

प्रतियोगिता का समापन एवं पुरस्कार



वितरण जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका तथा उत्तर प्रदेश कबड्डी एसोसिएशन, अयोध्या के सचिव बृजेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर विजेता एवं उपविजेता टीमों को सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता के सफल संचालन में उत्तर प्रदेश कबड्डी एसोसिएशन के सचिव बृजेन्द्र प्रताप सिंह तथा निर्णायक मंडल की महत्वपूर्ण भूमिका रही। निर्णायक मंडल में चेयरमैन रेफरी बोर्ड उत्तर प्रदेश कबड्डी एसोसिएशन, अयोध्या सुरेश कुमार सिंह के साथ माया प्रसाद राय (आजमगढ़), शराफत अली (सीतापुर), शिवसुन्दर शुक्ला (रायबरेली), पुनीत तेवतिया (हापुड़), सी.जी. शुक्ला (लखनऊ), अनूप शुक्ला (लखनऊ), टिंकू कुमार (लखनऊ), राधेश्याम पटेल (वाराणसी), बृजेश (रायबरेली), पीयूष (अयोध्या), रामअवध वर्मा (वाराणसी), अजय मिश्रा (लखनऊ), हिमांशु (रायबरेली), नीतू गुप्ता (अयोध्या), मनीषा (लखनऊ), अंजली वर्मा (वाराणसी), प्रतीक्षा (एटा), क्षमा वर्मा (बुलंदशहर) एवं प्रांजलि पटेल (प्रयागराज) ने निर्णायक की भूमिका निभाई। इस अवसर पर क्षेत्रीय क्रीड़ाधिकारी, लखनऊ मंडल, डॉ. अतुल सिन्हा विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने प्रतियोगिता की व्यवस्थाओं का निरीक्षण करते हुए आयोजन में लगे क्रीड़ाधिकारियों एवं कर्मचारियों का उत्साहवर्धन किया। इसके अतिरिक्त जनपद के वरिष्ठ खिलाड़ी अशोक कुमार, अवैतनिक कबड्डी सचिव, रायबरेली बृजेन्द्र शुक्ला तथा खेल विभाग की ओर से उपक्रीड़ाधिकारी, कासगंज हरफूल सिंह भी उपस्थित रहे। प्रतियोगिता के सफल एवं सुव्यवस्थित आयोजन हेतु खेल विभाग के अधिकारियों, उत्तर प्रदेश कबड्डी एसोसिएशन के पदाधिकारियों, कर्मचारियों एवं आयोजन समिति के सदस्यों द्वारा आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गईं। आयोजन में बाबूलाल, मंजू, नरेश कुमार निषाद, जीवन रक्षक, अश्वनी चन्द्रा, पिंकू कुमार, मोहम्मद शोएब खान एवं किरन कुमारी ने विशेष योगदान दिया।प्रतियोगिता के दौरान बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिकों, खेल प्रेमियों एवं वरिष्ठ खिलाड़ियों ने उपस्थित होकर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया तथा खेल भावना की सराहना की। सम्पूर्ण प्रतियोगिता का संचालन क्रीड़ाधिकारी, जिला खेल कार्यालय, रायबरेली धीरेन्द्र कुमार पुरुषोत्तम के निर्देशन में किया गया। प्रतियोगिता के समापन अवसर पर उन्होंने प्रदेश के विभिन्न जनपदों एवं मंडलों से आए समस्त खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों, निर्णायकों, अतिथियों, दर्शकों एवं आयोजन में सहयोग प्रदान करने वाले सभी व्यक्तियों के प्रति आभार व्यक्त किया। आगरा छात्रावास की टीम की शानदार जीत के साथ प्रदेश स्तरीय सब-जूनियर बालिका कबड्डी प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक समापन हुआ।

बाल दिवस पर आशा यस ए वन फाउंडेशन ने 50 जरूरतमंद बच्चों को बांटी शैक्षणिक सामग्री

कॉपी-किताब, पेन और बिस्कुट वितरित कर बच्चों के चेहरे पर बिखेरी मुस्कान, शिक्षा के प्रति किया प्रेरित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) हरहुआ। बाल दिवस के अवसर



पर आशा यस ए वन फाउंडेशन की ओर से विकासखंड हरहुआ के गढ़वा, काजीसराय क्षेत्र में जरूरतमंद बच्चों के बीच सेवा एवं सहयोग का सराहनीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान लगभग 50 गरीब एवं जरूरतमंद बच्चों को कॉपी, किताब, पेन तथा बिस्कुट वितरित किए गए। कार्यक्रम का उद्देश्य आर्थिक अभाव में शिक्षा से वंचित बच्चों को प्रोत्साहित करना तथा उनमें पढ़ाई के प्रति रुचि और उत्साह बढ़ाना रहा। शैक्षणिक एवं खाद्य सामग्री पाकर बच्चों के चेहरों पर खुशी देखने को मिली। फाउंडेशन के इस प्रयास की स्थानीय लोगों ने सराहना की। इस अवसर पर फाउंडेशन की संस्थापिका आशा यादव ने कहा कि बाल दिवस के अवसर पर बच्चों को शैक्षणिक एवं खाद्य सामग्री वितरित कर उन्हें शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया है। बच्चे ही देश का भविष्य हैं, जरूरत है तो बस उनकी प्रतिभा को पहचानने और उसे सही दिशा देने की। उन्होंने कहा कि बाल दिवस देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती के रूप में मनाया जाता है। चाचा नेहरू बच्चों से बेहद प्रेम करते थे, इसलिए बच्चे भी उन्हें प्यार से चाचा नेहरू कहते थे। आज के बच्चे ही कल के भारत का निर्माण करेंगे। देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए बच्चों को बेहतर शिक्षा, उचित पोषण, सुरक्षा और अनुकूल वातावरण देना बेहद जरूरी है।

इस अवसर पर फाउंडेशन की महामंत्री निशा देवी, हरजिंदर कौर, हरजीत कौर, हरेंद्र सिंह सहित अन्य लोग उपस्थित रहे। सभी ने बच्चों को मन लगाकर पढ़ाई करने और अपने उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए प्रेरित किया।

भक्ति, संस्कृति और सामाजिक समरसता के अद्भुत संगम से आलोकित हुआ नोएडा का सेक्टर-105; सैकडों श्रद्धालुओं ने अस्ताचलगामी सूर्य को दिया संध्या अर्घ्य

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। 'दर्शन दीनानाथ, अरघ के बेर बा...' और 'काँच ही बाँस के बहंगिया...' जैसे पारंपरिक व हृदयस्पर्शी लोकगीतों



की मधुर स्वरलहरियों से आज नोएडा का सेक्टर-105 पूरी तरह आध्यात्मिक आभा और लोक आस्था के रंग में रंग गया। आर.डब्ल्यू.ए. कार्यकारिणी समिति एवं छठ पूजा समिति, सेक्टर-105 के संयुक्त तत्वावधान में कम्युनिटी सेंटर प्रांगण में आयोजित चार दिवसीय महापर्व छठ के तीसरे दिन, संध्या अर्घ्य का यह महाउत्सव केवल एक धार्मिक अनुष्ठान न रहकर भारतीय संस्कृति, प्रकृति-प्रेम और अटूट सामाजिक एकता का एक ऐतिहासिक प्रतिमान बनकर उभरा।गन्ने के हरे-भरे मंडपों की पावन छांव, पारंपरिक सूप-दउरे में सजे ऋतुफल, ठेकुआ व अर्घ्य सामग्री और दीपों की जगमगाती रोशनी के बीच जब व्रतियों ने पवित्र जलराशि में प्रवेश किया, तो समूचा परिसर छठी मैया और भगवान भास्कर के गगनभेदी जयकारों से गुंजायमान हो उठा। हर आंख में श्रद्धा, हर हृदय में कृतज्ञता और पूरे वातावरण में एक अलौकिक शांति का अनुभव हो रहा था। अस्ताचलगामी सूर्य को नमनः संघर्ष से प्रकाश की ओर ले जाने वाला शाश्वत संदेशः-छठ महापर्व विश्व की एकमात्र ऐसी सनातन परंपरा है, जो उगते सूर्य के साथ-साथ डूबते (अस्ताचलगामी) सूर्य को भी उतनी ही श्रद्धा से नमन करना सिखाती है। यह पावन अनुष्ठान मानव जीवन को यह गहरा दर्शन देता है कि परिस्थितियां चाहे जितनी भी प्रतिकूल या अंधकारमय क्यों न हों, आस्था, संयम और सकारात्मकता का दीप कभी बुझना नहीं चाहिए-क्योंकि हर सूर्यास्त के बाद एक नया और उज्ज्वल सूर्योदय निश्चित है। सायं ठीक 4:00 बजे से प्रारंभ हुए इस भव्य अनुष्ठान में सैकडों की संख्या में श्रद्धालुओं और मातृशक्ति ने विधि-विधानपूर्वक अस्ताचलगामी सूर्य देव को प्रथम अर्घ्य अर्पित कर परिवार की सुख-समृद्धि, समाज के सौहार्द तथा राष्ट्र और विश्व के कल्याण की मंगलकामना की। महानगरीय व्यस्तता के बीच जीवंत हुई जड़ें; पूरे एनसीआर में बना मिसालः-नोएडा जैसे आधुनिक और तेज रफ्तार महानगर की भागदौड़ भरी जीवनशैली के बीच सेक्टर-105 के इस सामूहिक आयोजन ने सिद्ध कर दिया कि हमारी सांस्कृतिक जड़ें आज भी उतनी ही गहरी, जीवंत और ऊर्जावान हैं। पारंपरिक लोकगीतों की गूंज, अनुशासित व्यवस्था और महाप्रसाद वितरण ने समूचे प्रांगण को एक विशाल, आत्मीय और स्नेहिल परिवार के सूत्र में पिरो दिया। अपनी भव्यता, स्वच्छता और सौहार्दपूर्ण वातावरण के कारण यह आयोजन क्षेत्र में चर्चा और प्रेरणा का केंद्र बन गया है। इस ऐतिहासिक आयोजन को अभूतपूर्व सफलता दिलाने में सेक्टर-105 कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष दिव्य कृष्णात्रे, महासचिव श्री राजीव दुबलिश, उपाध्यक्ष श्रीमती रानी गौतम, कोषाध्यक्ष श्री सुरेश बंसल, संयुक्त सचिव श्री अनिल भदौरिया तथा कार्यकारिणी के वरिष्ठ सदस्य उमेश माथुर, महेश चौहान एवं नवीन पालीवाल का दूरदर्शी नेतृत्व और अथक परिश्रम अत्यंत सराहनीय रहा। इसके साथ ही छठ पूजा समिति के श्री अभिषेक पांडे, विवेक पांडे, प्रभात रंजन तथा सेक्टर के समस्त सम्मानित निवासियों ने जिस तन्मयता और सेवा-भाव से अपना योगदान दिया, उसने इस उत्सव में चार चांद लगा दिए। विशेष रूप से श्रीमती पूजा शर्मा जी की गरिमामयी सहभागिता और समर्पण ने इस आयोजन को सेक्टर-105 की स्मृतियों में सदा के लिए अविस्मरणीय बना दिया।आरडब्ल्यूए अध्यक्ष दिव्य कृष्णात्रेय ने इस पावन अवसर पर सभी व्रतियों, तपस्वियों और माताओं के कठोर व्रत व अटूट समर्पण को नमन करते हुए आरडब्ल्यूए अध्यक्ष दिव्य कृष्णात्रे ने कहा 'सेक्टरवासियों के इसी अटूट विश्वास, अपनत्व और सामूहिक सहभागिता की शक्ति से हमारा सेक्टर-105 आज एक आदर्श और जीवंत परिवार के रूप में खड़ा है। छठी मैया और प्रत्यक्ष देव भगवान भास्कर की असीम कृपा से आप सभी के जीवन में सदैव सुख, शांति, उत्तम स्वास्थ्य और समृद्धि का प्रकाश बना रहे-यही हमारी हार्दिक प्रार्थना है।'

भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा का अनावरण एवं आदि पूजा के साथ जनजातीय गौरव सप्ताह के राज्य स्तरीय कार्यक्रम का शुभारंभ

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने धरती आबा को किया नमन, वंदे मातरम् एवं राष्ट्रगान के सामूहिक गायन से गूंजा कार्यक्रम स्थल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)शहडोल। ब्यौहारी में आयोजित जनजातीय गौरव



सप्ताह के राज्य स्तरीय कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा का अनावरण कर तथा आदि पूजा के साथ किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने भगवान बिरसा मुंडा को नमन कर उनके योगदान और बलिदान का स्मरण किया। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर उपस्थित अतिथियों एवं जनसमूह द्वारा राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् एवं राष्ट्रगान का सामूहिक गायन किया गया। राष्ट्रभक्ति और जनजातीय गौरव के भाव से ओतप्रोत इस अवसर पर पूरा कार्यक्रम स्थल देशभक्ति के स्वर से गूंज उठा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सहित उपस्थित अतिथियों का विधायक शरद कोल, जयसिंह मरावी एवं श्रीमती अमिता चपरा द्वारा वीरान माला एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर आत्मीय स्वागत एवं सम्मान किया गया।

प्रचार रथ वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते सदर विधायक भूपेश चौबे,सड़क सुरक्षा के नियम अपनाएं, हादसों पर लगाएं अंकुश : भूपेश चौबे

एआरटीओ कार्यालय में सड़क सुरक्षा पखवाड़े का शुभारंभ, विधायक ने प्रचार रथ को दिखाई हरी झंडी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। परिवहन विभाग की ओर से सड़क सुरक्षा के प्रति आमजन को जागरूक करने के उद्देश्य से एआरटीओ कार्यालय में सड़क सुरक्षा पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सदर विधायक भूपेश चौबे रहे। इस दौरान विधायक ने सड़क सुरक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए प्रचार रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर सदर विधायक भूपेश चौबे ने कहा कि सड़क सुरक्षा केवल सरकारी अभियान नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। यातायात नियमों का पालन कर सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली जनहानि को रोका जा सकता है। दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट और चारपहिया वाहन में सीट बेल्ट का अनिवार्य रूप से प्रयोग करें। अभिभावक भी अपने बच्चों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करें और नाबालिगों को वाहन चलाने की अनुमति न दें। एआरटीओ प्रशासन कौशल कुमार सिंह ने कहा कि सड़क सुरक्षा पखवाड़े के तहत लोगों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। वाहन चालकों को हेलमेट, सीट बेल्ट, निर्धारित गति सीमा, वाहन के आवश्यक दस्तावेज और सड़क संकेतों के प्रति जागरूक किया जाएगा।हमारा प्रयास है कि जागरूकता और नियमों के पालन से सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सके।एआरटीओ प्रवर्तन सुश्री सुधा ने कहा कि सड़क सुरक्षा के लिए यातायात नियमों का पालन करना बेहद जरूरी है।



नियमों की अनदेखी न केवल चालक, बल्कि सड़क पर चलने वाले अन्य लोगों की जान भी खतरे में डालती है। क्षेत्राधिकारी यातायात सुधीर सिंह ने कहा कि तेज गति, नशे में वाहन चलाना और लापरवाही सड़क दुर्घटनाओं के प्रमुख कारण हैं। सुरक्षित सफर के लिए संयमित होकर वाहन चलाएं और यातायात नियमों को अपनी आदत में शामिल करें। कार्यक्रम में पीटीओ मनोज सिंह, प्रधान सहायक कृपाकर दुबे, ललित नारायण तिवारी, विनोद सोनकर, अमल त्रिपाठी, विकास सोनकर, डीवीए अनूप कुमार, सारथी स्टॉफ दीपक सिंह आदि मौजूद रहे। संचालन आनंद त्रिपाठी ने किया।

डीएम ने सीएम डैशबोर्ड पर विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा,योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन एवं समयबद्ध लक्ष्य पूर्ति के दिए निर्देश

लंबित कार्यों में तेजी लाकर विकास योजनाओं की रैंकिंग में सुधार लाने पर दिया जोर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में सीएम डैशबोर्ड (विकास) के अंतर्गत संचालित विभिन्न विकासपरक योजनाओं एवं निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने विभिन्न विभागों की योजनाओं की प्रगति, निर्धारित लक्ष्यों के सापेक्ष उपलब्धियों तथा सीएम डैशबोर्ड पर प्रदर्शित विभागीय रैंकिंग की विस्तार से समीक्षा की। समीक्षा बैठक के दौरान छात्रवृत्ति योजना, प्रधानमंत्री जननी सुरक्षा योजना, जल जीवन मिशन, फैमिली आईडी, सड़कों एवं सेतुओं के निर्माण सहित अन्य महत्वपूर्ण विकास योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों से योजनावार प्रगति की जानकारी लेते हुए कार्यों में आ रही समस्याओं एवं लंबित प्रकरणों के संबंध में आवश्यक जानकारी प्राप्त की। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि शासन की प्राथमिकता वाली योजनाओं का क्रियान्वयन निर्धारित मानकों एवं समयसीमा के अनुरूप सुनिश्चित किया जाए। जिन योजनाओं में प्रगति अपेक्षाकृत धीमी है, उनमें विशेष ध्यान देते हुए कार्यों में तेजी लाई जाए।



उन्होंने कहा कि पात्र लाभार्थियों को विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ समय से उपलब्ध कराया जाए। उन्होंने सड़कों एवं सेतुओं के निर्माण कार्यों की गुणवत्ता एवं समयबद्ध पूर्णता सुनिश्चित करने, जल जीवन मिशन के अंतर्गत निर्धारित लक्ष्यों को समय से पूरा करने तथा फैमिली आईडी एवं छात्रवृत्ति से संबंधित कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण कराने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि सीएम डैशबोर्ड पर विभागीय योजनाओं की नियमित निगरानी करते हुए पोर्टल पर अद्यतन एवं सही सूचनाएं अपलोड की जाएं।

साथ ही जिन बिंदुओं पर प्रगति अपेक्षित है, उनमें कार्ययोजना बनाकर प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए, जिससे जनपद की विकास योजनाओं की प्रगति एवं रैंकिंग में सुधार हो सके।

बैठक में जिला विकास अधिकारी वर्षा सिंह, जिला अर्थ एवं सांख्यिकी अधिकारी सुधीर गिरी, उपायुक्त उद्योग परमहंस मौर्या, जिला कार्यक्रम अधिकारी सुरेन्द्र कुमार, जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी पीयूष चन्द्र राय सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

वाराणसी/छठ महापर्व पर सूप परिक्रमा में शामिल हुए पार्षद प्रतिनिधि अमित मौर्यवंशी,परिवार की सुख-समृद्धि की कामना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) वाराणसी। लोक आस्था,श्रद्धा और समर्पण के महापर्व छठ पूजा के चौथे दिन उदीयमान सूर्यदेव को अर्घ्य अर्पित करने के पावन अवसर पर छठ व्रतियों ने सूप परिक्रमा की धार्मिक परंपरा का श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ निर्वहन किया। छठ पूजा की यह पावन परंपरा छठी मैया एवं सूर्यदेव के प्रति अटूट आस्था,विश्वास और समर्पण का प्रतीक है। इसी शुभ अवसर पर मुरारी चौक के समीप स्थित शिवाजी नगर कॉलोनी में प्रिय मित्र कृष्ण मोहन सिंह के परिवार द्वारा आयोजित छठ पूजा में पूर्व किसान मोर्चा मंडल अध्यक्ष एवं वर्तमान पार्षद प्रतिनिधि अमित मौर्यवंशी शामिल हुए। उन्होंने कृष्ण मोहन सिंह की माता श्रीमती सारिका सिंह एवं बुआ श्रीमती बीना सिंह के साथ सूप परिक्रमा की पावन परंपरा में सहभागिता की। इस अवसर पर कृष्ण मोहन सिंह,सुप्रिया सिंह,शकुंतला देवी,आशीष सिंह सहित परिवार के अन्य सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने छठी मैया एवं सूर्यदेव से परिवार और समाज के सुख-समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य,खुशहाली एवं मंगलमय जीवन की कामना की।



श्रद्धा और भक्ति से परिपूर्ण इस आयोजन में छठ महापर्व की धार्मिक परंपरा और पारिवारिक एकजुटता की सुंदर झलक देखने को मिली।

ऊँचाहार में आयोजित रोजगार मेले में 472 अभ्यर्थियों का प्राथमिक चयन,मंत्री ने रोजगार मेले का किया शुभारम्भ, चयनित अभ्यर्थियों को वितरित किए नियुक्ति पत्र

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। उत्तर प्रदेश रोजगार मिशन के अन्तर्गत जिला सेवायोजन कार्यालय, रायबरेली द्वारा आज डॉ0 भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय, ऊँचाहार के परिसर में एक दिवसीय विधानसभा स्तरीय रोजगार मेले का आयोजन किया गया। रोजगार मेले में 18 कम्पनियों ने प्रतिभाग किया, जिसमें कुल 948 अभ्यर्थियों ने प्रतिभाग कर रोजगार के अवसर प्राप्त करने हेतु साक्षात्कार दिया। इनमें से लगभग 472 अभ्यर्थियों का प्राथमिक रूप से चयन किया गया, जबकि कुछ कम्पनियों के परिणाम अभी लंबित हैं। रोजगार मेले का शुभारम्भ मुख्य



अतिथि मा0 मंत्री खाद्य एवं रसद तथा नागरिक आपूर्ति, उत्तर प्रदेश सरकार मनोज कुमार पाण्डेय ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मंत्री जी ने चयनित अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र वितरित किए तथा युवाओं को रोजगार के अवसरों का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में जिला सेवायोजन अधिकारी डॉ0 दिनकर कुमार एवं डॉ0 भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय, ऊँचाहार के प्राचार्य द्वारा मेले में प्रतिभाग करने वाले अतिथियों, नियोजकों एवं अभ्यर्थियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। मेले में मुख्य रूप से महादेव हनुमंन विजय प्लेसमेंट सर्विस, ब्राइट फ्यूचर, अडानी सोलर, टाटा मोटर्स, न्यू हॉलैण्ड, शिवम् होम हेल्थकेयर प्रा0लि0 सहित 18 कम्पनियों के प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया।कार्यक्रम का संचालन प्रभारी मीना मंच, बेसिक शिक्षा विभाग रायबरेली एस0एस0 पाण्डेय एवं जिला सेवायोजन कार्यालय के सर्वेश कुमार राय द्वारा किया गया। वहीं सुश्री श्वेता मिश्रा, कौशल विकास मिशन द्वारा गीत एवं वक्तव्य के माध्यम से प्रस्तुति दी गई।रोजगार मेले के सफल आयोजन में जिला प्रबन्धक, कौशल विकास मिशन राजीव सिंह, बालेन्द्र सिंह, तृप्ति सिंह, कौशल विकास मिशन एवं कार्यदेशक, रा03औ0प्र0सं0 ऊँचाहार प्रतिमा, अनुदेशक अर्चना मौर्य, आनन्द सिंह यादव, जिला सेवायोजन कार्यालय के जितेन्द्र सिंह कनौजिया, गुलरेज सुंहेल, धीरेन्द्र सिंह, रामेन्द्र कुमार पाण्डेय, अश्वनी कुमार, मो0 जमीर, तनीषा श्रीवास्तव, सोनाली सोनकर, विजय कुमार, सुरेश चन्द्र, रामेन्द्र कुमार एवं महेन्द्र कुमार द्वारा विशेष सहयोग प्रदान किया गया।

प्रयागराज से अगवा छात्रा चित्रकूट से बरामद,दो आरोपी गिरफ्तार,दिनदहाड़े बाइक से उठाकर ले गए थे युवक, स्कूल का दोस्त निकला मुख्य आरोपी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज/घूरपुर। यमुनापार के घूरपुर थाना क्षेत्र में दिनदहाड़े 20 वर्षीय छात्रा के अपहरण के मामले का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। पुलिस ने चित्रकूट में छापेमारी कर अगवा छात्रा को सकुशल बरामद कर लिया, जबकि अपहरण में शामिल दो युवकों को गिरफ्तार किया है। पकड़ा गया मुख्य आरोपी छात्रा का पुराना परिचित बताया जा रहा है, जिससे उसकी दोस्ती स्कूल के दौरान हुई थी। रविवार देर रात पुलिस टीम छात्रा और दोनों आरोपियों को लेकर प्रयागराज पहुंची। अल्ट्रासाउंड सेंटर से बाहर निकलते ही किया अपहरणः- जानकारी के मुताबिक, गौहनिया स्थित गंगा-यमुना-सरस्वती कॉलोनी निवासी दीवान चंद्र गुप्ता की 20 वर्षीय बेटी संध्या गुप्ता 14 नवंबर की दोपहर अपनी सहेली पिंकी के साथ सेमरा-कल्बना रोड स्थित ग्लोबल डायग्नोस्टिक सेंटर में अल्ट्रासाउंड कराने गई थी। जांच कराने के बाद जैसे ही संध्या सेंटर से बाहर निकली, पहले से घात लगाए बाइक सवार दो युवकों ने उसे रोक लिया। आरोप है कि दोनों युवक उसे जबरन अपने साथ ले जाने लगे। संध्या ने विरोध किया तो एक युवक ने उसे गोद में उठाकर जबरन बाइक पर बैठा लिया। इसके बाद दोनों आरोपी उसे लेकर मौके से फरार हो गए। अचानक हुई इस घटना से उसकी सहेली पिंकी घबरा गई और शोर मचाते हुए आरोपियों को रोकने का प्रयास करती रही, लेकिन तब तक युवक दूर निकल चुके थे। सहेली ने परिजनों को दी सूचना, पुलिस ने खंगाले सीसीटीवी घटना के बाद सहेली पिंकी ने संध्या के परिजनों को पूरी जानकारी दी। सूचना मिलते ही परिवार में अफरा-तफरी मच गई। परिजन पुलिस के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और छात्रा की तलाश शुरू कराई। संध्या की मां गुड़िया गुप्ता की तहरीर पर घूरपुर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है


नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

स्पोर्ट्स



जय शाह लगातार दूसरी बार निर्विरोध आईसीसी चेयरमैन,यह पद संभालने वाले 5वें भारतीय, शशांक मनोहर दो बार चेयरमैन रहे

स्पोर्ट डेस्क। जय शाह लगातार दूसरी बार इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) के चेयरमैन बने हैं। आईसीसी के बोर्ड और कमेटी की बैठकों में उन्हें निर्विरोध चुना गया। इंडोनेशिया के बाली में हुई बैठक में डायरेक्टर्स ने जय शाह को फिर चेयरमैन बनाने का प्रस्ताव दिया था। जय शाह लगातार दो बार यह पद संभालने वाले दूसरे भारतीय हैं। आईसीसी चेयरमैन के रूप में काम करना बड़ी जिम्मेदारी है। मैं दुनिया भर में क्रिकेट को आगे बढ़ाने के लिए सभी सदस्यों के साथ मिलकर काम करता रहूंगा। 2028 लॉस एंजिलिस ओलिंपिक में क्रिकेट की वापसी हमारे लिए नए दर्शकों तक पहुंचने का बड़ा मौका है।हमें क्रिकेट का भविष्य मजबूत बनाना है। इसके लिए खिलाड़ियों, फैंस, कमर्शियल पार्टनर्स और खेल से जुड़े सभी लोगों के हितों का ध्यान रखना होगा।शाह 2 साल पहले पहली बार चेयरमैन बने थे शाहः- जय शाह 2024 में पहली बार आईसीसी के चेयरमैन बने थे। उन्होंने न्यूजीलैंड के ग्रेग बार्कले की



जगह ली थी। 36 साल के जय शाह आईसीसी के सबसे कम उम्र के चेयरमैन बने थे। आईसीसी चीफ को 2015 से पहले तक प्रेसिडेंट कहा जाता था। इसके बाद से इसे चेयरमैन कहा जाने लगा। लगातार दूसरी बार आईसीसी चेयरमैन बनने वाले दूसरे भारतीयः-जय शाह आईसीसी प्रमुख बनने वाले पांचवें भारतीय हैं। उनसे पहले जगमोहन डालमिया, शरद पवार, एन. श्रीनिवासन और शशांक मनोहर यह पद संभाल चुके हैं। शशांक मनोहर लगातार 2 बार आईसीसी चेयरमैन रहे हैं। शशांक ने नवंबर 2015 से मई 2016 तक बीसीसीआई प्रेसिडेंट रहते हुए अंतरिम चेयरमैन के रूप में यह जिम्मेदारी संभाली थी। फिर वे मई 2016 में आईसीसी चेयरमैन चुने गए। वे मई 2018 में दोबारा निर्विरोध चुने गए। उन्होंने 30 जून 2020 को दूसरा कार्यकाल पूरा किया। अहमदाबाद क्रिकेट बोर्ड से शुरुआत, 17 साल से क्रिकेट में सक्रिय हैंः- जय शाह ने 2009 में अहमदाबाद के केंद्रीय क्रिकेट बोर्ड के कार्यकारी बोर्ड के सदस्य बने थे। सितंबर 2013 में वे गुजरात क्रिकेट एसोसिएशन (जीसीए) के संयुक्त सचिव बने। 2015 में बीसीसीआई की वित्त समिति के सदस्य बने। 2019 में पहली बार बीसीसीआई के सेक्रेटरी बने।

उसके बाद 2022 में दोबारा आईसीसी के सेक्रेटरी चुने गए। शाह 2021 में एशियन क्रिकेट काउंसिल (एसीसी) के प्रेसिडेंट बने। जनवरी 2024 में उन्हें दोबारा एसीसी प्रेसिडेंट चुना गया। 2022 में वह इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल के फाइनेंस एंड कॉमर्शियल अफेयर्स कमेटी के चेयरमैन नियुक्त किए गए। उन्हें ओलिंपिक गेम्स के लिए आईसीसी ओलिंपिक वर्किंग ग्रुप का मेंबर भी बनाया गया।

रोज 6-7 घंटे वीडियो गेम खेलता हूं,जानता हूं ये लत मेरी जिंदगी खराब कर रही है, लेकिन छोड़ नहीं पा रहा, मैं क्या करूं

नयी दिल्ली। आज के समय में स्क्रीन टाइम बढ़ गया हैं सिर्फ कम उम्र लोग ही नहीं हर किसी को मोबाइल से जुडी कोई न कोई लत लग्न आम बात हो गयी हैं इन्ही विषयों को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर, जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं 21 साल का कॉलेज स्टूडेंट हूं। पिछले दो साल से ऑनलाइन गेमिंग में बहुत ज्यादा इन्वॉल्व हो गया हूं। शुरू में सिर्फ फन और टाइमपास के लिए खेलता था, लेकिन अब ऐसी लत हो गई है कि रोज 6-7 घंटे गेम खेलता हूं। कई बार पूरी रात जागकर भी। इससे मेरी पढ़ाई पर बुरा असर पड़ा है, मेरे मार्क्स गिर गए हैं और मैं क्लासेस भी मिस करने लगा हूं। इस कारण घरवालों से भी लड़ाई होती रहती है। मैं समझता हूं कि ये गलत है, लेकिन जब गेम नहीं खेलता तो चिड़चिड़ापन महसूस होता है। मेरी सोशल लाइफ भी लगभग खत्म हो गई है। इस लत से बाहर कैसे निकलूं? 21 साल की उम्र में ऑनलाइन गेम खेलना सामान्य बात है, लेकिन जब गेमिंग आपकी पढ़ाई, नींद, रिश्तों और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने लगे तो इसे गंभीरता से लेने की जरूरत है। आपके द्वारा बताए गए संकेत- जैसे रोज 6-7 घंटे गेम खेलना, पूरी रात जागना, पढ़ाई में गिरावट, क्लास मिस करना, परिवार से झगड़े, सोशल लाइफ का खत्म होना और गेम न खेलने पर चिड़चिड़ापन- दर्शाते हैं कि यह सिर्फ मनोरंजन नहीं रह गया है। मनोविज्ञान में इसे प्रॉब्लमैटिक गेमिंग या कुछ मामलों में गेमिंग डिसऑर्डर कहा जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के आईसीडी-11 वर्गीकरण के अनुसार गेमिंग डिसऑर्डर की तीन प्रमुख पहचान हैं– गेमिंग पर नियंत्रण कम होना। पढ़ाई, परिवार, नींद और सामाजिक जिम्मेदारियों की तुलना में गेमिंग को ज्यादा महत्व देना। नुकसान के बावजूद गेमिंग जारी रखना। आपके केस में ये तीनों संकेत दिखाई दे रहे हैं। रोज 6-7 घंटे से ज्यादा खेलना। टाइम पर कंट्रोल खत्म होना। पढ़ाई पर नेगेटिव प्रभाव पड़ना। जरूरी काम छोड़कर गेम खेलना। सोशल लाइफ से कटते जाना। गेम के लिए क्लास बंक करना। नींद खराब होना / रात भर जागना। नुकसान के बावजूद के गेमिंग जारी रखना। साइकोलॉजी क्या कहती है? इन गेम्स को कुछ इस तरह डिजाइन किया जाता है कि वे दिमाग के 'रिवॉर्ड सिस्टम' को एक्टिवेट करें। जब



न खेलने पर बेचैनी महसूस होती है। पढ़ाई, रिश्ते और दूसरी जिम्मेदारियां पीछे छूटने लगते हैं।हमारा ब्रेन और डोपामिन का रिवॉर्ड सर्किट-ऑनलाइन गेमिंग केवल मनोरंजन नहीं है। यह हमारे दिमाग के रिवॉर्ड सिस्टम को भी प्रभावित करती है। हर नई जीत, नया लेवल, बैज, रैंक या टीम की तारीफ दिमाग को एक छोटा-सा इनाम देती है। इस प्रक्रिया में डोपामिन नाम का न्यूरोकेमिकल महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। डोपामिन सिर्फ खुशी महसूस नहीं कराता, बल्कि दिमाग को यह भी सिखाता है कि कौन-सी चीज दोबारा करने लायक है। गेम्स में इनाम जल्दी और बार-बार मिलते हैं। इसलिए दिमाग धीरे-धीरे गेमिंग को एक हाई-रिवॉर्ड गतिविधि के रूप में पहचानने लगता है। मोबाइल की घंटी, गेम का नोटिफिकेशन, ऑनलाइन दोस्तों का मैसेज या 'बस एक और मैच' जैसे संकेत भी गेम खेलने की इच्छा जगाने लगते हैं। समय के साथ दिमाग पढ़ाई, व्यायाम, नींद या परिवार के साथ समय बिताने जैसी सामान्य गतिविधियों से ज्यादा रोमांचक और जरूरी गेमिंग को मानने लगता है। उसे समझ में भी आता है कि ये नुकसानदायक है, लेकिन वो चाहकर भी वो अपनी आदत को कंट्रोल नहीं कर पाता। दूसरे शब्दों में कहें तो इच्छाशक्ति की कमी नहीं होती। दिमाग का रिवॉर्ड सिस्टम ही गेमिंग को असामान्य रूप से ज्यादा महत्व देने लगता है। गेम न खेलने पर चिड़चिड़ापन क्यों होता है? अगर कोई व्यक्ति लंबे समय से रोज घंटों गेम खेल रहा है, तो उसका दिमाग उस लगातार मिलने वाले रोमांच और रिवॉर्ड का आदी हो सकता है। ऐसे में जब अचानक गेमिंग कम कर दी जाए या रोक दी जाए, तो दिमाग को वही उत्तेजना नहीं मिलती, जिसकी उसे आदत पड़ चुकी होती है। नतीजा यह होता है कि व्यक्ति चिड़चिड़ा, बेचैन या उदास महसूस कर सकता है। कुछ लोगों को गुस्सा ज्यादा आता है, किसी काम में मन नहीं लगता या हर समय खालीपन-सा महसूस होता है। अब यहां पर कुछ बातें गौर करने वाली हैं- इसे केवल 'गेम खेलने की जिद' समझना सही नहीं है। यह दिमाग और भावनाओं की



आप कोई लेवल जीतते हैं, कोई मिशन पूरा करते हैं या आपकी रैंक बढ़ती है, तो दिमाग में डोपामिन रिलीज होता है। इससे अच्छा महसूस होता है और दिमाग बार-बार उसी अनुभव को दोहराना चाहता है। इस तरह धीरे-धीरे-गेम खेलने की इच्छा बढ़ती जाती है। पहले जितना मजा पाने के लिए ज्यादा समय खेलना पड़ता है। गेम एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। ये तब दिखाई देती है, जब कोई व्यक्ति अपनी पसंदीदा गतिविधि से दूर रहने की कोशिश करता है। एक्सपर्ट मानते हैं कि गेम न खेल पाने पर बार-बार चिड़चिड़ापन, बेचैनी या उदासी महसूस होने का मतलब है कि अब गेम सिर्फ मनोरंजन नहीं रह गया है। आप गेम को नहीं, गेम आपको कंट्रोल कर रहा है। इसलिए ऐसे लक्षणों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। क्या गेम आपको कंट्रोल कर रहा है? करें सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट-यहां मैं आपको एक सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट दे रहा हूं। नीचे ग्राफिक्स में कुल 10 सवाल हैं। आपको इन सवालों को 0 से 3 के स्केल पर रेट करना है। जैसेकि पहले सवाल के लिए अगर आपका जवाब 'कभी नहीं' है तो 0 नंबर दें और अगर आपका जवाब 'लगभग रोज' है तो 3 नंबर दें। अंत में अपने टोटल स्कोर की एनालिसिस करें। स्कोर का इंटरप्रिटेशन भी ग्राफिक में दिया है। कॉग्निटिव बिहेवियर थेरेपी (सीबीटी) पर बेस्ड सेल्फ हेल्प प्लान-1. गेमिंग डायरी बनाएं- अचानक छोड़ने की बजाय ये आदत धीरे-धीरे कम करें। कई लोग एकदम गेम छोड़ने की कोशिश करते हैं और फिर दोबारा उसी पैटर्न में लौट जाते हैं। बेहतरी तरीका ये है कि आप एक गेमिंग डायरी बनाएं। उसमें सात दिनों तक यह लिखें– कब गेम खेला? उससे पहले मनःस्थिति कैसी थी? उस समय मन में क्या विचार आया? गेम खेलने की इच्छा कितनी तीव्र थी? कितनी देर गेम खेला? 2. अपने गेमिंग ट्रिगर्स पहचानें-खुद से ये सवाल पूछेंःमैं कब सबसे ज्यादा गेम खेलता हूं? बोर होने पर? तनाव होने पर? अकेलापन महसूस होने पर? परीक्षा का दबाव महसूस होने पर? पढ़ाई से बचने के लिए? देर रात जागने पर? ऑनलाइन दोस्तों का दबाव में? अक्सर गेमिंग असली समस्या नहीं होती, बल्कि यह किसी भावनात्मक जरूरत को पूरा करने का जरिया बन जाती है। अपने ट्रिगर्स को पहचानने पर पैटर्न को समझने में मदद मिलेगी। ये भी समझ आएगा कि आपका ट्रिगर क्या है। 3. गेमिंग अचानक पूरी तरह बंद न करें-यदि आप रोज 6-7 घंटे गेम खेलते हैं, तो एकदम से बंद करने पर चिड़चिड़ापन बढ़ सकता है। बेहतर होगा कि इसे धीरे-धीरे समय कम किया जाए। पहला सप्ताहः रोज अधिकतम 4 घंटे, रात 11 बजे के बाद गेमिंग नहीं। दूसरा सप्ताहः रोज अधिकतम 3 घंटे, सप्ताह में एक पूरी शाम बिना गेमिंग के। तीसरा सप्ताहः रोज अधिकतम 2 घंटे, पढ़ाई पूरी होने के बाद ही गेमिंग। चौथा सप्ताहः वीक में 60-90 मिनट, वीकेंड में अधिकतम 2 घंटे। 4. इच्छा की लहर को गुजरने दें जब गेम खेलने की तीव्र इच्छा हो, तो तुरंत गेम शुरू न करें। इसकी बजाय ये काम करें- कुछ मिनट गहरी सांस लें। इच्छा की तीव्रता को 0 से 10 के पैमाने पर अंक दें। खुद से कहें, 'यह केवल इच्छा है, कोई आदेश नहीं।' इसके बाद 20 मिनट तक कुछ दूसरे काम करें, जैसे- टहलना, स्नान करना, व्यायाम करना, किसी दोस्त से बात करना, नोट्स व्यवस्थित करना- अक्सर यह तीव्र इच्छा 15-30 मिनट में अपने-आप कम होने लगती है। 5. अपने विचारों को चुनौती दें-फीलिंगः 'बस एक गेम खेलूंगा।' विचारः 'मेरे लिए एक गेम अक्सर तीन घंटे में बदल जाता है।' फीलिंगः 'मेरा मूड खराब है।' विचारः 'पहले टहलता हूं, किसी से बात करता हूं या कुछ खा लेता हूं, फिर फैसला करूंगा।' फीलिंगः 'मैं वैसे भी पढ़ाई में पीछे हूं।' विचारः '30 मिनट की पढ़ाई भी शून्य से बेहतर है।' फीलिंगः 'दोस्त इंतजार कर रहे हैं।' विचारः 'मेरी पढ़ाई और भविष्य की जिम्मेदारी मेरी है।' 6. खाली समय को रिप्लेस करें-सिर्फ गेम हटाने, कम करने से काम नहीं चलेगा। आखिर दिमाग को दूसरा रिवॉर्ड चाहिए। इसलिए गेम की जगह कुछ दूसरे ऐसे काम करें, जिससे रिवार्ड भी मिले और नुकसान भी न हो। जैसे- जिम जाएं। स्पोर्ट्स खेलें। दोस्तों से मिलें। नई स्किल सीखें। म्यूजिक या क्रिएटिव हॉबी अपनाएं। 7. माहौल में बदलाव करें- गेमिंग से जुड़े नोटिफिकेशन बंद करें। रात में मोबाइल या लैपटॉप बेडरूम से बाहर रखें। इंटरनेट के लिए समय-सीमा तय करें। पढ़ाई और गेमिंग की जगह अलग रखें। परीक्षा के दौरान पासवर्ड किसी विश्वसनीय व्यक्ति के पास रख सकते हैं। 8. वास्तविक जीवन के पुरस्कार वापस लाएं-गेमिंग कम करने से शुरुआत में खालीपन महसूस हो सकता है। इसलिए जीवन में दूसरी सकारात्मक गतिविधियों को शामिल करना जरूरी है। जैसे रोज कम-से-कम-पढ़ाई के दो 45 मिनट के सत्र। 20 मिनट का व्यायाम या पैदल चलना। किसी व्यक्ति से आमने-सामने बातचीत। तय समय पर सोना। कोई ऐसी गतिविधि जो स्क्रीन से जुड़ी न हो। 9. परिवार को सहयोगी बनाएं-अपनी यात्रा में परिवार की मदद लें और घरवालों से खुलकर बात करें। उनसे कहें– मुझे लग रहा है कि मैं जरूरत से ज्यादा गेम खेल रहा हूं। मैं इस आदत को कम करना चाहता हूं। मुझे डांट या गुस्से से ज्यादा मदद की जरूरत है। मैं गेमिंग कम करने की कोशिश कर रहा हूं। आप मुझे मेरे तय नियम याद दिला सकते हैं। रात में इंटरनेट बंद रखने में मदद कर सकते हैं। हर हफ्ते मेरी प्रोग्रेस पूछ सकते हैं। अगर मैं गलती करूं, तो मुझे जज करने के बजाय दोबारा कोशिश करने के लिए प्रोत्साहित करें।क्या दवाइयों से मदद मिलती है? फिलहाल गेमिंग डिसऑर्डर के लिए कोई विशेष स्वीकृत दवा उपलब्ध नहीं है। इसके मुख्य ट्रीटमेंट में ये चीजें शामिल हैं– कॉग्निटिव बिहेवियर थेरेपी, स्लीप क्वालिटी में सुधार, रूटीन को रेगुलर करना, परिवार की मदद और सपोर्ट वास्तविक जीवन की गतिविधियों और उपलब्धियों को बढ़ाना। यदि साथ में अवसाद, चिंता या ध्यान संबंधी समस्या मौजूद हो, तो मनोचिकित्सक स्थिति के अनुसार दवाओं पर विचार कर सकते हैं। लेकिन दवाएं कोई त्वरित समाधान नहीं हैं और इन्हें केवल विशेषज्ञ की सलाह पर ही लिया जाना चाहिए। अंतिम बात-यह एक गंभीर समस्या है, लेकिन इससे बाहर निकलना पूरी तरह संभव है। यहां हमारा मकसद खुद को दोष देना नहीं है, बल्कि दोबारा अपने जीवन पर कंट्रोल हासिल करना है। गहरी इच्छा शक्ति और थोड़ी मेहनत से आप ये काम कर सकते हैं।

स्पेन का लगातार 44 मैच न हारने का सफर रुका,इंग्लैंड ने 3-2 से हराया- केन, कोंसा और व्हाइट ने गोल किए

स्पोर्ट डेस्क। ग्लैंड ने रविवार को मैड्रिड में खेले गए नेशंस लीग



के मुकाबले में वर्ल्ड चैंपियन स्पेन को 3-2 से हरा दिया। इस हार के साथ स्पेन का लगातार 44 कॉम्पिटिटिव मैचों में नहीं हारने का रिकॉर्ड टूट गया। टीम को आखिरी बार मार्च 2023 में किसी कॉम्पिटिटिव मैच में हार मिली थी। फ्रेंडली मुकाबलों को शामिल करें तो स्पेन लगातार 43 मैचों में नहीं हारा था। ग्रुप ए3 के इस मुकाबले में इंग्लैंड की ओर से हैरी केन, एजरी कोंसा और बेन व्हाइट ने गोल किए। वहीं, स्पेन के लिए मिकाएल ओयारजबाल और निको विलियम्स ने गोल दागे। इस जीत के साथ इंग्लैंड ग्रुप में टॉप पर पहुंच गया और मार्च में होने वाले क्वार्टर फाइनल के लिए सीडेड टीम बन गया। दोनों टीमें पहले ही अगले राउंड के लिए क्वालिफाई कर चुकी थीं। पहले हाफ के आखिरी मिनट में केन ने पेनल्टी से गोल कियाः- एटलेटिको मैड्रिड के मेट्रोपोलिटानो स्टेडियम में इंग्लैंड ने शुरुआत से ही आक्रामक खेल दिखाया। गोलकीपर उनाई सिमोन ने जूड बेलिंगहैम का शानदार शॉट रोककर स्पेन को शुरुआती झटका लगने से बचाया। एंथनी गॉर्डन का शॉट भी डिफेंडर्स ने ब्लॉक कर दिया। दूसरे हाफ में 4 मिनट में इंग्लैंड ने दागे 2 गोलः-स्पेन के कोच लुइस डे ला फुएंते ने हाफ टाइम में तीन बदलाव किए। उन्होंने पेड्री और फर्मिन लोपेज को मैदान पर उतारा, लेकिन इंग्लैंड ने दूसरे हाफ में तेजी से दो गोल कर दिए। 53वां मिनटः डेक्लन राइस के कॉर्नर पर एजरी कोंसा ने हेडर से गोल किया। इंग्लैंड की बढ़त 2-0 हो गई।

57वां मिनटः हैरी केन और जूड बेलिंगहैम के तालमेल के बाद बेन व्हाइट ने तीसरा गोल दागा। इंग्लैंड 3-0 से आगे हो गया। रेड कार्ड के बाद स्पेन ने 2 गोल किएः-तीन गोल से पिछड़ने के बाद स्पेन ने वापसी की कोशिश की। इसी दौरान इंग्लैंड के



मिडफील्डर इलियट एंडरसन ने पेनल्टी एरिया में लामिन यामल को फाउल कर दिया। रेफरी ने एंडरसन को रेड कार्ड दिखाया। इसके बाद इंग्लैंड को 10 खिलाड़ियों के साथ खेलना पड़ा। मिकाएल ओयारजबाल ने पेनल्टी को गोल में बदलकर स्पेन का खाता खोला। इसके बाद एंथनी गॉर्डन की गलती का फायदा उठाते हुए यामल ने निको विलियम्स को पास दिया। विलियम्स का शॉट पोस्ट से टकराकर गोल में चला गया। स्कोर 3-2 हो गया। स्पेन ने बराबरी के लिए लगातार हमले किए, लेकिन इंग्लैंड के गोलकीपर जेम्स ट्रैफर्ड ने यामल और मार्क कुकुरेला के शॉट रोक दिए। इस मैच में ट्रैफर्ड को जॉर्डन पिकफोर्ड की जगह मौका मिला था। ट्यूशेल बोले- टीम ने मैदान पर अपना सब कुछ दियाः-इंग्लैंड के कोच थॉमस ट्यूशेल ने टीम के प्रदर्शन की तारीफ की। उन्होंने आईटीवी से कहा, 'हमने मैदान पर अपना सब कुछ दिया। हम निडर होकर खेले। टीम का जज्बा, एनर्जी और फुटबॉल की क्वालिटी सबसे ऊंचे स्तर पर थी।' इंग्लैंड के मिडफील्डर डेक्लन राइस ने कहा, 'हमें पता था कि हम आज रात उन्हें हराने जा रहे हैं। क्रोएशिया के खिलाफ पिछले मैच के बाद मैनेजर का संदेश काफी सकारात्मक था। शुरुआती 10 मिनट हमारा अब तक का सर्वश्रेष्ठ खेल था।' वहीं, स्पेन के स्ट्राइकर मिकाएल ओयारजबाल ने कहा, 'दूसरे हाफ की शुरुआत में दो गोल खाना अफसोसजनक रहा। हालांकि, टीम ने हार नहीं मानी और लगातार कोशिश करती रही। हम बराबरी नहीं कर सके। इसका श्रेय इंग्लैंड के गोलकीपर को भी जाता है।' इंग्लैंड की यह जीत इसलिए भी खास है, क्योंकि स्पेन ने यूरो 2024 के फाइनल में उसे हराकर खिताब जीता था। इसके बाद स्पेन ने इस साल दूसरी बार वर्ल्ड कप का खिताब भी अपने नाम किया, जबकि इंग्लैंड तीसरे स्थान पर रहा। अब दोनों टीमें नेशंस लीग के अगले राउंड में पहुंच चुकी हैं। ग्रुप में टॉप रहने के कारण इंग्लैंड को मार्च में होने वाले क्वार्टर फाइनल के ड्रॉ में सीडिंग मिलेगी।

5 साल में भारत में 2 बड़े क्रिकेट टूर्नामेंट-2029 चैंपियंस ट्रॉफी की मेजबानी मिली, बांग्लादेश के साथ 2031 वनडे वर्ल्ड कप होस्ट करेगा

स्पोर्ट डेस्क। भारत अगले पांच साल में दो बड़े आईसीसी क्रिकेट टूर्नामेंट की मेजबानी करेगा। 2029 में चैंपियंस ट्रॉफी खेली जाएगी। 2031 वनडे वर्ल्ड कप भारत और बांग्लादेश मिलकर होस्ट करेंगे। ICC ने रविवार को 2035 तक के पुरुषों के बड़े टूर्नामेंट का कैलेंडर जारी किया। बोर्ड ने लॉस एंजिलिस ओलिंपिक 2028 के क्वालिफाइंग मुकाबलों के लिए मेजबान देशों और तारीखों का भी ऐलान किया। पुरुषों का क्वालिफायर 5 से 13 फरवरी 2028 तक बांग्लादेश में होगा। महिलाओं का टूर्नामेंट 26 फरवरी से 5 मार्च तक अमेरिका में खेला जाएगा। इन मुकाबलों के जरिए ओलिंपिक में जगह बनाने वाली आखिरी टीमें तय होंगी। आईसीसी ने वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप



(डब्लूटीसी) 2029 और 2031 के फाइनल की मेजबानी इंग्लैंड को दी है। 2029 का फाइनल 8 से 12 जून और 2031 का मुकाबला 12 से 16 जून तक खेला जाएगा। 2033 और 2035 के फाइनल की तारीखें भी तय कर दी गई हैं, लेकिन उनके मेजबान देश का ऐलान बाकी है। दोनों फाइनल जून में होंगे। डब्लूटीसी में टीमें दो साल में अलग-अलग देशों के खिलाफ टेस्ट सीरीज खेलती हैं। पॉइंट्स टेबल की टॉप-2 टीमें फाइनल में पहुंचती हैं। 2030 का टी-20 वर्ल्ड कप तीन देशों में:-2030 का टी-20 वर्ल्ड कप इंग्लैंड, आयरलैंड और स्कॉटलैंड में खेला जाएगा। यह टूर्नामेंट 4 जुलाई से 4 अगस्त तक होगा। 2032 और 2034 में भी टी-20 वर्ल्ड कप होंगे। 2032 का आयोजन 14 अक्टूबर से 14 नवंबर और 2034 का टूर्नामेंट 6 जुलाई से 6 अगस्त तक खेला जाएगा। इसी तरह 2033 में चैंपियंस ट्रॉफी और 2035 में वनडे वर्ल्ड कप भी होगा। 2028 ओलिंपिक में क्रिकेट की वापसीः- क्रिकेट 128 साल बाद ओलिंपिक में वापसी करेगा। इससे पहले यह खेल 1900 के पेरिस ओलिंपिक में शामिल था। उस समय ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस के बीच सिर्फ एक मुकाबला हुआ था।

अब लॉस एंजिलिस में 2028 में होने वाले ओलिंपिक में पुरुष और महिला, दोनों वर्गों में टी-20 क्रिकेट खेला जाएगा। दोनों टूर्नामेंट में 8-8 टीमें हिस्सा लेंगी।

इन्हें चार-चार टीमों के दो ग्रुप में बांटा जाएगा। हर टीम अपने ग्रुप की बाकी तीन टीमों से एक-एक मैच खेलेगी। इस तरह ग्रुप स्टेज में कुल 12 मुकाबले होंगे। दोनों ग्रुप की टॉप टीमें फाइनल में पहुंचेंगी।

मां सरस्वती हमेशा उन्हें आशीर्वाद देती हैं, जो पूरी श्रद्धा से उनके प्रति समर्पित हों

एक तरफ ऐसे शिक्षक हैं, जिन्होंने पुश्तैनी घर और खेत बेच कर गरीब युवाओं के सपने पूरे करने में मदद की। दूसरी ओर है ऐसी छात्रा, जो रात में पुणे की सड़कों पर झाड़ू लगाती है और क्रिमेटोरियम में पढ़ती है, क्योंकि वहां शांति रहती है। करते थे। महाजन 25 की उम्र में नौकरी छोड़ कर जलगांव लौट आए और पैतृक संपत्ति में मिला घर और खेत बेच दिए। इस पैसे से उन्होंने किराए के मकान में 10 जरूरतमंद स्टूडेंट्स को पढ़ाना शुरू किया। अगले ही साल सभी 10 स्टूडेंट महाराष्ट्र लोक जरूरत थी। ग्रेजुएशन के वर्षों में वे मॉर्निंग क्लासेस जातीं और नाइट शिफ्ट में पुणे नगर निगम के स्वीपर के तौर पर काम करती थीं। 2023 में उन्होंने फर्स्ट क्लास मार्क्स के साथ माइक्रोबायोलॉजी में बीएससी पूरी की। आर्थिक तंगी के कारण दो साल के ब्रेक



एक ने दूसरों का भविष्य संवारने में अपनी संपत्ति त्याग दी, तो दूसरी भविष्य बनाने के लिए हालात से जूझ रही है। अलग रास्तों के बावजूद दोनों ने एक ऐसी चीज पा ली, जिसे पाने में कई लोग पूरी जिंदगी लगा देते हैं- संतुष्टि का भाव। आपने कभी सोचा है कि इंसान को जीवन में सफल और संतुष्ट क्या बनाता है? अपना घर, संपत्ति, ऊंचा पद या इतनी दौलत कि कल की चिंता ही न रहे? हम अकसर सफलता को दौलत से आंकते हैं। लेकिन हमारे आसपास की कहानियां बताती हैं कि संतुष्ट जीवन का लेना-देना संपत्ति से बहुत कम, जबकि उद्देश्य से बहुत अधिक है। यजुर्वेंद्र महाजन को लीजिए। उन्होंने ऐसा फैसला लिया, जिसे समझना ज्यादातर लोगों के लिए मुश्किल है। 2005 में पुणे के एक कोचिंग सेंटर में पढ़ाते हुए उन्होंने देखा कि गरीब स्टूडेंट्स में सफल होने की महत्वाकांक्षा तो है, लेकिन उसे पूरा करने के साधन नहीं हैं। वे फीस भरने के लिए संघर्ष करते थे, तंग कमरों में रहते थे और पढ़ाई के लिए अकसर खाने तक से समझौता सेवा आयोग की परीक्षा पास कर क्लास-1 और 2 ऑफिसर बन गए। यहीं से शुरू हुआ सफर आगे जाकर दीपस्तंभ फाउंडेशन बना। आज जलगांव, पुणे और दिल्ली में इसके रेजिडेंशियल सेंटर्स दिव्यांग, अनाथ, ट्रांसजेंडर और कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि वाले युवाओं समेत सैकड़ों स्टूडेंट्स की मदद कर रहे हैं। महाजन आज भी पत्नी, बच्चों समेत किराए के मकान में रहते हैं, लेकिन उन्होंने सैकड़ों ऐसे युवाओं के लिए घर बनाया है, जिनके पास और कोई ठिकाना नहीं था। अब पुणे की 25 वर्षीय रेशमा पठान को भी देखिए। कोथरुड की साईनाथ वसाहट स्लम में पली-बढ़ीं रेशमा को पढ़ाई के लिए शांत जगह नहीं मिल पाती थी। भीड़ भरे घरों, शोरगुल वाले सेलेब्रेशन, लाउडस्पीकरों और मोहल्ले में रोजमर्रा के डिस्टर्बेंस के बीच कॉन्संट्रेशन जैसे कोई लग्जरी थी। उन्होंने इसका अनोखा समाधान खोजा- लोकल क्रिमेटोरियम। वहां की बेंच और खुली जगह पर उन्हें वह शांति मिली, जिसकी उन्हें सख्त के बाद अब उन्होंने सावित्रीबाई फुले पुणे यूनिवर्सिटी में पब्लिक हेल्थ में मास्टर्स डिग्री के लिए दाखिला लिया है। उनका मकसद झुग्गियों के लोगों की स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों को समझना और उन हालात को बेहतर बनाना है, जिनमें उनके जैसे लोग पले-बढ़े हैं। दुर्भाग्य से, नगर निगम द्वारा रात में महिलाकर्मियों के काम पर रोक लगाने के बाद उन्हें अपनी नाइट शिफ्ट जॉब छोड़नी पड़ी। अब वे पढ़ाई का खर्च उठाने के लिए पार्ट टाइम रोजगार तलाश रही हैं। हम अकसर खुद से यह कहकर खुशियों को टालते रहते हैं कि जब बड़ा घर लेंगे, बेहतर सेलरी होगी, प्रमोशन होगा या काफी बचत कर लेंगे तो संतुष्ट होंगे। इन सुविधाओं की चाहत बुरी नहीं, लेकिन खतरा तब होता है, जब हम हमेशा खुशी को कुछ अधिक हासिल करने से जोड़ देते हैं। फंडा यह है कि समृद्ध जीवन का असल पैमाना यह नहीं है कि हमारे पास कितना कुछ है, बल्कि यह है कि जो हमारे पास है, उससे हम कितनी सार्थकता ला पाते हैं। एन. रघुरामन

स्त्रियों की बुद्धिमत्ता को क्या हम कम करके आंकते हैं?

गुजराती की लोक-कथाओं में गांगली नामक एक लड़की की कहानी मिलती है। गांगली से दूध लाने को कहो तो वो दही ले आएगी। वह कोई भी काम ठीक से नहीं कर पाती और ये शब्द- 'गांगली तो गांगली ही रही', आज भी कई बार कहे-सुने जाते हैं, जब घर की औरतों से कोई भूल हो जाती है। गुजराती की लेखिका इला से है कि एक दलित स्त्री कहती है, रोज सुबह मैं जब सफाई करने जाती हूं तो कहीं से लपककर एक परछाई मुझ पर चढ़ जाती है, नोच लेती है मुझे और इस परछाई के प्रतीक उच्चवर्णीय होते हैं। नीरव पटेल की इस कविता का शीर्षक है- मी-टू। कवि का कटाक्ष उन सब की तरफ है, जो सिर्फ अपने वर्ग में होते अपमानों को अहमियत है।' अब मैं उससे यह पूछने लगूं कि इस बारे में तुमने अपनी जिंदगी में क्या किया, या फिर इस विचारधारा के सबूत उसकी जिंदगी में ढूंढूं, तो यह मेरी समस्या है, मेरी दृष्टि की कमजोरी है। आइडियोलॉजी का सबसे बड़ा रोड़ा तो विचारों का है, उससे आगे जाकर आप जिंदगी में क्या कर पाते हैं- यह तो रिसोर्सेज़ या



अरब मेहता का हाल ही में देहांत हुआ। उनकी लिखी गई एक कहानी में लीलावती नाम की घर की बहू, एक बेटी की मां, और पत्नी- तीनों भूमिकाओं में सबको 'गांगली' ही लगती है। लीलावती भी यह सुन-सुनकर मानने लगती है कि वह कमअक्ल है। वह अपनी बेटी की शादी में फटी हुई साड़ी पहनती है और सबकी डांट खाती है। वह दुकान में जाकर अपनी बचाई हुई छोटी-सी पूंजी से साड़ी की जगह घर के लिए पायदान ले आई थी। फिर भी लीलावती अपने आपको कोई 'विक्टिम' नहीं समझती, क्योंकि उसने अपने बारे में जो सुना, उसे ही सत्य मान लिया था। संयुक्त कुटुम्ब में चारों तरफ से एक बहू को कहा जाए कि उसकी दाल ठीक नहीं बनती, उसकी चाय बेस्वाद है, वह अपने बच्चे को सम्भालना नहीं जानती तो वह खुद को 'गांगली' ही समझेगी ना? लेखिका कहानी को पायदान की बात पर छोड़ देती हैं।एक ओर मध्यम वर्ग की लीलावती है और उसकी रचयिता इला अरब मेहता हैं, तो दूसरी ओर गुजरात के नीरव पटेल की एक कविता है, जो एक भीषण सत्य की ओर ले जाती है। कविता कुछ इस तरह देते हैं। किंतु जो ऐतिहासिक तौर पर हमेशा से होता आया है, उसकी ओर कोई ध्यान नहीं। न शोषण एक रूप में सामने आता है, और न ही उसके विरोध में उठते स्वर, फिर हम यह सरल-सी बात क्यों भूल जाते हैं? क्या हर तरह के शोषण को समझकर, उन्हें उनके परिप्रेक्ष्य में रखकर हम एक नहीं परंतु अनेक तरह के नारीवाद को समझ सकते हैं और अपने पाठकों को, विद्यार्थियों को समझा सकते हैं? फेमिनिज्म या नारीवाद को ही ले लीजिए। इन शब्दों की कल्पना करते ही हमारे सामने एक खास छवि उत्पन्न होती है- पढ़ी-लिखी शहरी औरतें, जो पितृसत्ता जैसे ढांचों को समझती हैं और उनके बारे में एक विशिष्ट शब्दावली का उपयोग करके अपनी बात रखती हैं। किंतु रोजमर्रा की जिंदगी में कई ऐसी औरतें भी मिलती हैं, जिन्होंने विश्विद्यालय के दरवाजे तक नहीं देखे, परंतु वे हर पहलू से फेमिनिस्ट हैं। मिसाल के तौर पर, आज सुबह किरण- जो मेरे यहां साफ-सफाई का काम करती है- मुझसे कहने लगी- 'सच तो ये है कि औरतों में ज्यादा अक्ल है, पर मर्दों ने उनको कमअक्ल कहकर नीचे दिखाया संसाधन का प्रश्न है।

किरण अपने घर-गृहस्थी के पाए को समझी है, पर उसे उसी घर-गृहस्थी में रहना होगा, क्योंकि उसके पास इतने विकल्प नहीं हैं।

उसको उकसाकर मैं उसके जीवन में खलल नहीं डाल सकती- वह न मेरा हक है, न ही वह मेरा विषय, जब तक कि वह कुछ कहे मुझसे।

फिलहाल तो उसके शब्दों को मैंने सुना और कहा, तुम ठीक कहती हो, बेटा, और बात आई-गई हो गई। जाग्रति बदलाव की शुरुआत है और कई बार जाग्रति अपने आप में एक बदलाव होती है।किस हद तक किसको जाना है, इस बात को लेकर सवाल पूछना हमारा हक नहीं बनता, परंतु किसकी शुरुआत कहां से हुई है, यह समझना जरूर हमारा फर्ज बनता है।जाग्रति बदलाव की शुरुआत है और कई बार जाग्रति अपने आप में एक अहम बदलाव होती है। किस हद तक किसको जाना है, इस बात को लेकर सवाल पूछना हमारा हक नहीं बनता, परंतु किसकी शुरुआत कहां से हुई है, यह समझना जरूर हमारा फर्ज बनता है। (ये लेखिका के अपने विचार हैं,रीटा कोठारी)

बाहर के 'रावण' पर जीत के बजाय भीतर के 'राम' का उत्सव मनाएं

जब कोई कंपनी संकट में घिरती है, तो जांचकर्ता अकसर उसके सिस्टम, अकाउंट्स या कॉर्पोरेट प्रशासन में खामियां कि हुआंग वेे एनवीडिया हेल्थकेयर वीपी किम्बर्ली पॉवेल से भी संबंध थे। ऐसे एक और मामले को लेकर भी खबरें सामने राज्य में ले आएं। ऋष्यशृंग वर्षा के देवता को प्रसन्न करने की शक्ति रखते थे। सैमसन और डिलाइला की कथा भी ऐसा ही



तलाशते हैं। लेकिन करीब 4 ट्रिलियन डॉलर मूल्य की चिपमेकर कंपनी एनवीडिया के सीईओ पद से इस्तीफा देने वाले जेन्सेन हुआंग की कहानी एक अलग सबक देती है। अब 63 के हो चुके हुआंग ने 1993 में, महज 30 की उम्र में एनवीडिया की सह-स्थापना की थी। इन 33 वर्षों में उन्होंने इसे एआई क्रांति को शक्ति देने वाली कंप्यूटर चिप का सबसे बड़ा सप्लायर बना दिया। उन्होंने ऐसे समय पद छोड़ा, जब कंपनी का वैश्विक प्रभाव अपने चरम पर था। इसलिए नहीं कि एनवीडिया को किसी गलत काम का दोषी पाया गया था, बल्कि इसलिए कि उनके निजी आचरण ने ऐसा संकट खड़ा कर दिया, जिसका दायरा उनके परिवार से आगे तक फैल गया और जिसने कॉर्पोरेट प्रशासन तथा राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े सवाल खड़े कर दिए। कर्मचारियों को लिखे माफीनामे में हुआंग ने स्वीकारा कि उन्होंने पत्नी से बेवफाई की थी। उनकी यह स्वीकारोक्ति उनके और एलिस हुआंग के कथित संबंधों की खबरें आने के बाद सामने आई। एलिस मेगास्पीड इंटरनेशनल की एग्जीक्यूटिव रह चुकी हैं। अमेरिकी खुफिया अधिकारियों को संदेह था कि वे बीजिंग के लिए काम करती हैं। हालांकि उनके चीनी जासूस होने के आरोप की पुष्टि नहीं हुई है और चीन ने भी इससे इनकार किया है। इस खबर के बाद विवाद ने नया मोड़ ले लिया आई हैं। एनवीडिया के बोर्ड ने इस आशंका की जांच के लिए स्वतंत्र जांच शुरू की कि कहीं जेन्सेन किसी विदेशी खुफिया अभियान का निशाना तो नहीं बने थे। बोर्ड ने कहा कि उसके पास यह मानने का कोई कारण नहीं है कि राष्ट्रीय सुरक्षा या एनवीडिया की गोपनीयता से समझौता हुआ है, लेकिन एक तमाम उपलब्ध सूचनाओं की पड़ताल करना चाहता है। ये घटनाएं एक अहम बात की ओर ध्यान दिलाती हैं। कंपनी और उसके प्रबंधन का पूरा ध्यान शायद अपने सुरक्षा घेरे के बाहर मौजूद 'रावण' को परास्त करने पर रहा- प्रतिस्पर्धियों, बिजनेस में प्रतिद्वंद्वियों, पूर्व कर्मचारियों और बाजार के खतरों पर। लेकिन इस दौरान वे भीतर के 'राम' पर कम ध्यान दे पाए- यानी उन लोगों के चरित्र, विवेक और निजी आचरण पर, जिन्हें कंपनी का नेतृत्व सौंपा गया था। ताकतवर लोगों को जाल में फंसाने के लिए निजी संबंधों का इस्तेमाल नई बात नहीं है। हमारा इतिहास, मिथक और उपन्यास ऐसी कहानियों से भरे पड़े हैं। भारतीय लोककथाओं में विषकन्याओं का उल्लेख मिलता है- ऐसी स्त्रियां, जिन्हें विष को हथियार की तरह इस्तेमाल करने का प्रशिक्षण दिया जाता था। अंग देश के राजा लोमपाद की कथा भी है। अकाल का सामना कर रहे राजा ने गणिकाओं को जंगल भेजा, ताकि वे युवा साधु ऋष्यशृंग को मोहपाश में बांधकर सबक देती है। सैमसन इसराइली योद्धा था, जिसकी शारीरिक शक्ति असाधारण थी। उसके शत्रु फिलिस्तीनी उसकी शक्ति का रहस्य जानना चाहते थे। उन्होंने उसकी प्रेमिका डिलाइला को धन का लालच देकर यह रहस्य उगलवाने के लिए राजी कर लिया। डिलाइला ने पता लगा लिया कि सैमसन की शक्ति उसके बालों में निहित थी। जब वह सो रहा था, तो उसने उसके बाल कटवा दिए। सैमसन की शक्ति जाती रही। फिलिस्तीनियों ने उसे बंदी बना लिया और अंततः उसकी आंखें फोड़ दीं। ये कहानियां हमें अपनी कमजोरियों से सबक लेने के लिए सुनाई जाती हैं।

किसी संगठन के सर्वाइवल और ग्रोथ के लिए सबसे बड़ा खतरा हमेशा उसके सुरक्षा घेरे के बाहर से नहीं आता। कई बार वह संगठन के भीतर ही पनपता है, शायद कॉर्नर के उस कैबिन में, जहां उसका सबसे ताकतवर अधिकारी बैठता है।

इसलिए बाहर के 'रावण' को परास्त करने का उत्सव मनाने के बजाय भीतर के 'राम' का नियमित आकलन करते रहना चाहिए।

फंडा यह है कि हम संगठनों को बाहरी खतरों से बचाने के लिए तो जटिल व्यवस्थाएं खड़ी कर देते हैं, पर उन व्यवस्थाओं की रक्षा की जिम्मेदारी जिनको सौंपी जाती है, उनके चरित्र की पड़ताल करना हम अकसर भूल जाते हैं। एन. रघुरामन

आज के बिशु और सूरज कल के वेलुसामी बन सकते हैं

'गुड मॉर्निंग स्टूडेंट्स, आप सभी की तरह हर एडमिशन सीजन में हजारों स्टूडेंट्स अपने साथ किसी बैकपैक से कहीं अधिक बड़ी चीज लेकर विश्वविद्यालयों में प्रवेश करते हैं। कुछ अपने उन पैरेंट्स के सपने लाते हैं, जो कभी क्लास में गए ही नहीं। कुछ ऐसे परिवारों की उम्मीदें लाते हैं, जिनमें कभी किसी ने ग्रेजुएशन गाउन नहीं पहना। और कई ऐसी जिम्मेदारी के साथ आते हैं, जिसे उन्होंने कभी चुना ही नहीं। अगर आपके साथ भी ऐसा ही है तो मेरी बात याद रखिएगा। आप महज एक डिग्री शुरू नहीं कर रहे हैं। आप परिवार के इतिहास का एक नया चैप्टर शुरू कर रहे हैं।' इंदौर में गुरुवार सुबह मैंने अपना लेक्चर ऐसे ही शुरू किया। जब मैंने उनसे पूछा कि आपमें से कितने ऐसे हैं, जो परिवार में पहली बार यूजी कोर्स में दाखिला ले रहे हैं तो कई ने हाथ उठा दिए। तब मैंने उन्हें एक ऐसे व्यक्ति की कहानी सुनाई, जिनका जन्म तमिलनाडु के नमक्कल जिले के एक छोटे किसान परिवार में हुआ था। इस परिवार के लिए जिंदगी जीना महत्वाकांक्षाओं से कहीं ज्यादा मायने रखता था। उनके पिता पहली कक्षा के बाद ड्रॉप-आउट हो गए थे। मां कभी स्कूल नहीं गईं। उन्हें नोट गिनने में भी मुश्किल होती थी। घर में किताबें दुर्लभ थीं। बिजली नहीं थी। कोई मार्गदर्शक नहीं था। परिवार में कोई भी ऐसा नहीं था, जो एल्जेब्रा, फिजिक्स या करियर चॉइस के बारे में समझा सके, क्योंकि पहले उस राह पर कोई चला ही नहीं। वे बिना किसी कोचिंग और परिवार की सहायता के सरकारी स्कूल में पढ़े थे। जब वे मद्रास (अब चेन्नई) में एंट्रेंस एग्जाम देने गए तो शिक्षकों ने उनसे कहा कि सिर्फ परीक्षा पर ध्यान देना, दूसरों के कपड़ों पर नहीं। उन्होंने वैसा ही किया और लौट आए। कुछ हफ्तों बाद एक रात जब केरोसिन लैंप बुझ गए तो उनकी मां ने कहा



कि तुम्हारे लिए एक चिट्ठी आई थी, जिसे छत के नीचे बांस में खोंसकर रखा है। उन्होंने पत्र खोला तो वह मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) में ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग का एडमिशन लेटर था। वर्षों बाद वही फर्स्ट-जनरेशन ग्रेजुएट आर. वेलुसामी ऑटोमोटिव टेक्नोलॉजी एंड प्रोडक्ट डेवलपमेंट के प्रेसिडेंट बने। आज वेलुसामी उन हजारों कर्मचारियों का नेतृत्व करते हैं, जो पूरे भारत में पसंद की जाने वाली गाड़ियां बनाते हैं। इनमें स्कॉर्पियो, एक्सयूवी-300, एक्सयूवी-700 और थार-रॉक्स शामिल हैं। अब 2026 में चलते हैं। असम के तिनसुकिया जिले में बिशु लिम्बू ने केरोसिन लैंप की मद्धिम रोशनी तले नीट की तैयारी की थी, क्योंकि उनके घर में न भरोसेमंद बिजली थी, न इंटरनेट। उनके पिता छोटे किसान हैं। उनकी मां एक-एक पैसा संभालकर खर्च करती थीं। लेकिन बिशु ने यह मानने से इनकार किया कि डॉक्टर का सफेद कोट सिर्फ अमीर परिवारों के बच्चों के लिए होता है। उन्होंने नीट-2026 में 720 में से 610 अंक हासिल किए और अब मेडिकल कॉलेज में दाखिले की तैयारी कर रहे हैं। अब राजस्थान के बूंदी जिले के कापरेन गांव में सूरज सैनी से मिलने चलते हैं। वे 12वीं तक हिंदी मीडियम स्टूडेंट रहे। छुट्टियों में परिवार की मदद के लिए वे गांव के घरों में पुताई करते थे।12वीं तक वे नीट के बारे में जानते तक नहीं थे, क्योंकि परिवार में पहले कोई उस रास्ते पर नहीं चला था। पहले अटेम्प्ट ने उन्हें सिखाया कि सही दिशा के बिना प्रयास काफी नहीं होता। उन्हें सही गाइडेंस मिला, अथक मेहनत की और 583 अंक हासिल कर सरकारी मेडिकल कॉलेज में सीट हासिल कर ली। वर्षों की पढ़ाई, अनुशासन और लगातार मेहनत से कल आप भी दूसरे वेलुसामी बन सकते हैं- जो प्रोडक्ट्स बनाए, कंपनियों का नेतृत्व करे, रोजगार पैदा करे और हजारों की प्रेरणा बने। हर सफल परिवार में कोई ऐसा जरूर होता है, जिसने पहला ग्रेजुएट बनने का साहस किया था। अगर इस साल आप परिवार के पहले ग्रेजुएट बनने के लिए कॉलेज में प्रवेश ले रहे हैं, तो आपको लग सकता है कि आपका सबसे बड़ा लक्ष्य डिग्री हासिल करना है। लेकिन ऐसा नहीं है। आपका असली लक्ष्य ऐसा इंसान बनना है, जिसकी ओर देखकर आपके छोटे भाई-बहन कहें कि 'अगर वह ऐसा कर सकता है, तो मैं भी कर सकता हूं।' फंडा यह है कि आपके एडमिशन लेटर पर सिर्फ आपका नाम होता है, लेकिन उससे बनने वाला भविष्य पूरे परिवार का होता है। आप सिर्फ एक स्टूडेंट नहीं हैं, बल्कि ऐसे एक्सप्लोरर हैं- जो बिना नक्शे के किसी जंगल से अपना रास्ता बना रहे हैं। एन. रघुरामन

पश्चिम के चश्मे से ही साहित्य का मूल्यांकन क्यों होता रहे?

इस वर्ष साहित्य के नोबेल पुरस्कार के लिए मनोनीत लेखकों में भारत के 94 वर्षीय दिग्गज गुलजार भी शामिल थे। शब्दों को करीने से गढ़ने वाले गुलजार का आक्रामक वर्चस्व है और चयन मनमाना तथा पक्षपातपूर्ण है। आंकड़े खुद हकीकत बयां करते हैं। 1901 में पुरस्कार की शुरुआत से लेकर अब तक



भारत के घर-घर में पहचाने जाते हैं। अनुवादों के माध्यम से वे दुनिया भर में भी सम्मानित हैं। उनके लेखन का विस्तार विस्मयकारी है। कविता, फिल्मी गीत, बाल साहित्य, नाटक, कहानियां, गद्य रचनाएं और पटकथाएं- उनकी लेखनी ने इन सभी विधाओं को समृद्ध किया है। उनकी उम्र और साहित्य के प्रति आजीवन समर्पण को देखते हुए यह उचित ही होता कि उनके साहित्यिक अवदान को सम्मानित किया जाता। लेकिन निर्णायकों ने कनाडाई लेखिका ऐन कार्सन को चुना। यकीनन, कार्सन भाषाशास्त्र की सक्षम विदुषी हैं, लेकिन गुलजार की विपुल और जीवंत साहित्यिक रचनाधर्मिता का महत्व भी कम नहीं ठहराया जा सकता। स्वीडन में बैठी समिति ने पश्चिम की जानी-पहचानी भाषाओं के सुविधाजनक दायरे से बाहर किसी साहित्यिक प्रतिभा को तलाशने की जेहमत नहीं उठाई। साहित्य का नोबेल पाने वाले आखिरी और इकलौते भारतीय रबींद्रनाथ ठाकुर थे, जिन्हें यह सम्मान 1913 में मिला था। उसके बाद एक सदी से भी अधिक समय बीत चुका है। क्या हम सचमुच यह मान लें कि 1.4 अरब की आबादी वाले इस उपमहाद्वीप में- जहां 24 अत्यंत विकसित साहित्यिक भाषाएं हैं और जिनकी लिखित परम्पराएं सहस्राब्दियों पुरानी हैं- एक भी ऐसा लेखक नहीं हुआ, जो इस पुरस्कार के योग्य हो? स्टॉकहोम की संकीर्ण दृष्टि और संस्थागत उपेक्षा के चलते गैर-पश्चिमी दुनिया के जिन साहित्यकारों को ऐतिहासिक रूप से इस सम्मान से वंचित रहना पड़ा, उनकी सूची चौंकाने वाली है। मसलन, अर्जेंटीना के होर्खे लुईस बोर्खेस, अफ्रीका के चिनुआ अचेबे और न्गूगी वा थ्योंगो या सीरिया के अदूनिस- इन सभी की अनदेखी की गई। भारत में प्रेमचंद, आर.के. नारायण, वैकम मुहम्मद बशीर और महाश्वेता देवी जैसे लेखकों के नामों पर भी कभी विचार नहीं किया गया। यहां तक कि लियो टॉल्स्टॉय जैसे दिग्गज को भी इस सम्मान से वंचित रखा गया। इतनी चूकों के बाद यह पुरस्कार वैश्विक उत्कृष्टता का पैमाना कैसे हो सकता है? सच यह है कि विज्ञान के विषयों को अपवाद मान लें, तो बाकी क्षेत्रों में ये पुरस्कार काफी हद तक यूरोप-केंद्रित होकर रह गए हैं- जहां पश्चिम साहित्य के 123 नोबेल विजेताओं में अकेले फ्रांस के हिस्से 15 विजेता आए हैं। वह इस सूची में सबसे ऊपर है। उसके ठीक पीछे अमेरिका और ब्रिटेन हैं। भाषा के आधार पर देखें तो अंग्रेजी में लिखने वाले लेखकों को 30 पुरस्कार मिले हैं। इसके बाद, अपेक्षानुसार, फ्रेंच को 16, जर्मन को 14 और स्पैनिश को 11 पुरस्कार मिले हैं। इन चार पश्चिमी भाषाओं को मिलाकर देखें तो साहित्य के वैश्विक नोबेल पुरस्कारों का लगभग दो-तिहाई हिस्सा इन्हीं के खाते में चला जाता है। शेष दुनिया- जिसमें एशिया, मध्य-पूर्व और अफ्रीका की प्राचीन सभ्यताएं शामिल हैं- के हिस्से बहुत कम ही आ पाया है। इसका एक कारण यह भी है कि नोबेल पुरस्कारों की चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता का अभाव है। फैसले गोपनीयता के आवरण में लिए जाते हैं और उन्हें न तो सार्वजनिक पड़ताल के दायरे में लाया जाता है, न ही विशेषज्ञों की समीक्षा के लिए प्रस्तुत किया जाता है। इससे पुरस्कार के चयन पर तात्कालिक भू-राजनीतिक हितों का प्रभाव हावी होने की गुंजाइश बन जाती है। नोबेल शांति पुरस्कार को ही लें। आधुनिक काल में शांति के सबसे बड़े प्रतीक महात्मा गांधी को 14 बार इस पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया, पर उन्हें यह सम्मान नहीं मिला। इसके उलट, रिचर्ड निक्सन और हेनरी किसिंजर को यह पुरस्कार दे दिया गया, जबकि वियतनाम में उन्हीं के कार्यकाल में बमबारी हुई थी। दुर्भाग्य से- खासकर विकासशील देशों में- लोग स्वीडन या नॉर्वे में बैठे निर्णायकों के फैसलों को जरूरत से ज्यादा महत्व देते हैं। अनुवाद की बाधा को बहाने के रूप में पेश करना दरअसल अपनी विफलता स्वीकार करना है।

यदि कोई पुरस्कार खुद को वैश्विक बताता है, तो दुनिया के साहित्य को पढ़ने-समझने की क्षमता विकसित करने की जिम्मेदारी उस संस्था की है, न कि दुनिया की यह जिम्मेदारी है कि वह खुद को यूरोप के एक छोटे से अभिजात वर्ग की भाषाओं में अनूदित करे।

हमें भी अपने मूल्यांकन के मानदंडों को उपनिवेशवादी प्रभावों से मुक्त करना होगा। नोबेल की उपेक्षा से हमारे साहित्य की गरिमा कतई कम नहीं होती। (ये लेखक के अपने विचार हैं,पवन के. वर्मा)

हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री में चमकना है तो अपने काम में 'स्टाइल' लाइए

इन दिनों मैं देखता हूं कि कॉलेज से पास-आउट युवा सूट और टाई के आकर्षण में आकर हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री में आने की कोशिश करते हैं। लेकिन धीरे-धीरे उन्हें समझ आता है कि यहां ऐसा कोई काम नहीं है, जिसे वे किसी दूसरे से करने के लिए कह सकें, लेकिन खुद न करना चाहें। अचानक-से वे खुद को टेबल से पानी और वाइन के गिलास उठाते और उसे साफ करते हुए पाते हैं। उस समय उनकी आंखें टेबल के बजाय इधर-उधर देखती ज्यादा नजर आती हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि वे नहीं चाहते कि कोई परिचित या परिजन उन्हें यह काम करते हुए देखे। इसमें हैरानी नहीं कि युवाओं में हॉस्पिटैलिटी को कामचलाऊ पेशा माना जाता है, लेकिन यह उनको कई ऐसी महत्वपूर्ण स्किल्स देता है, जो दूसरी इंडस्ट्री शायद ही देती है। आप पूछ सकते हैं कि आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाए बिना हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री में कैसे टिके रहें। मेरा सीधा-सा जवाब है- 'स्टाइल कोशंट' जोड़िए। जापानी मिल्क-बन का उदाहरण लीजिए, जो मीठे, मुलायम और फोटोजेनिक होते हैं। ये जापान ही नहीं, पूरे यूरोप और अमेरिका में भी बेहद सफल हैं। ये बन ऊपर से सुनहरे भूरे और अंदर से बादल की तरह मुलायम होते हैं। ऊपरी तौर पर देखें तो ये मुंबई में किसी चौपाटी के स्टॉल पर पावभाजी के साथ परोसे जाने वाले पाव जैसे दिखेंगे। लेकिन किसी शेफ की फोटोजेनिक नजरों से वही बन उसके बर्गर को कल्ट-बर्गर बना सकते हैं और उसकी कीमत 300फीसदी बढ़ा सकते हैं। मुझे हाई-एंड केक बनाने के आर्ट के बारे में तब पता चला, जब एक मशहूर बेकर ने अभिनेत्री काजोल के लिए बनाए जाने वाले केक पर लिखा जाने वाला हनी ईरानी का मैसेज गलती से मेरे दोस्त को भेज दिया। काजोल ने 5 अगस्त को अपना जन्मदिन मनाया और हनी ईरानी भारतीय सिनेमा की वेटरन एक्ट्रेस और पुरस्कार विजेता स्क्रीनराइटर हैं।

इजराइल अपने पायलट को 40 साल तक खोजता रहा,दो ईरानी जनरल को अगवा किया

एक की हत्या की,खुलासा- लेबनान में मारा गया था

तेल अवीव। इजराइल करीब 40 साल तक अपने लापता पायलट रॉन अराद की तलाश में ईरान को जिम्मेदार मानता रहा। इस शक में उसकी खुफिया



एजेंसी मोसाद ने ईरान के दो जनरलों को अगवा किया और उनसे पूछताछ की। न्यूयॉर्क टाइम्स की एक जांच रिपोर्ट के मुताबिक, इनमें से एक जनरल अलीरेजा असगरी की हत्या भी कर दी। दूसरे जनरल अब्दुल्ला साबेरी को अगवा कर इजराइल ले गए और पूछताछ के बाद दक्षिण अफ्रीका में छोड़ दिया। लेकिन अब इजराइल को लगता है कि रॉन अराद को कभी ईरान ले जाया ही नहीं गया था। उसकी मौत लेबनान में ही हुई थी। रॉन अराद इजराइली वायुसेना में अधिकारी था। 16 अक्टूबर 1986 को वह दक्षिणी लेबनान के ऊपर एक लड़ाकू विमान में उड़ान भर रहा था। इस दौरान उसने फिलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गनाइजेशन के ठिकाने पर बम गिराया। बम समय से पहले फट गया और विमान बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। अराद को विमान से बाहर निकलना पड़ा। इसके बाद लेबनान के शिया संगठन अमल के लड़ाकों ने उसे पकड़ लिया। संगठन के सुरक्षा प्रमुख मुस्तफा दिरानी ने उसे अपनी निगरानी में रखा। अमल संगठन ने अराद के बदले लाखों डॉलर और फिलिस्तीनी व लेबनानी कैदियों की रिहाई की मांग की। लेकिन उस समय इजराइल के रक्षा मंत्री यित्जाक राबिन कैदियों की अदला-बदली के लिए तैयार नहीं थे। इससे अराद की तलाश में कोई खास काम नहीं हुआ। ईरान उस समय लेबनान की राजनीति में काफी प्रभाव रखता था। वह अमल समेत कई शिया संगठनों को पैसा और ट्रेनिंग देता था। इसी वजह से इजराइल को शक हुआ कि अमल के लड़ाके अराद को ईरान के हवाले कर सकते हैं। 1989 में अराद की पत्नी ने बताया कि इजराइली सरकार ने उन्हें भरोसा दिलाया है कि उनके पति जिंदा हैं और उन्हें ईरानी एजेंटों को सौंप दिया गया है। इसके बाद इजराइल में यह बात आम हो गई कि अराद को ईरान ने अपने कब्जे में रखा है। 1992 में मोसाद के एक अधिकारी इजराइल पेरलोव को एक ईरानी डॉक्टर मिला। डॉक्टर ने दावा किया कि उसने अराद का इलाज तेहरान और लेबनान में किया। डॉक्टर का लाई डिटेक्टर टेस्ट हुआ लेकिन नतीजे साफ नहीं थे। मोसाद ने उसे पैसे देकर अपने दावे का सबूत देने को भी कहा। लेकिन डॉक्टर दोबारा सामने नहीं आया। मोसाद के दूसरे अधिकारी रामी इग्रा का मानना था कि डॉक्टर पैसे के लिए झूठ



बोल रहा था। इसके बावजूद उसकी कहानी को ईरान के खिलाफ सबूत मान लिया गया। पूछताछ में ईरान का नाम लिया, सबूत नहीं मिलाः-1994 में इजराइली कमांडो ने लेबनान में एक ऑपरेशन चलाकर मुस्तफा दिरानी को अगवा किया। उसे इजराइल की एक सीक्रेट जेल में रखा और पूछताछ की गई। दिरानी ने बताया कि उसने अराद को लेबनान के नबी चित गांव में एक परिवार की देखरेख में रखा था। एक रात उसकी सुरक्षा में लगे लोग इजराइली हमले के कारण वहां से चले गए। जब वे लौटे तो अराद गायब था। पूछताछ करने वाले इजराइली अधिकारी उसकी बात पर भरोसा नहीं कर रहे थे। दिरानी ने बाद में आरोप लगाया कि पूछताछ के दौरान उसे शारीरिक और यौन यातनाएं दी गईं। इजराइल ने यातना के आरोपों से इनकार किया लेकिन माना कि उसके साथ सख्ती की गई थी। सख्त पूछताछ के दौरान दिरानी ने कहा कि एक ईरानी अधिकारी ने उसे बताया था कि ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड्स अराद को अपने साथ ले गए थे। लेकिन इस दावे की पुष्टि करने वाला कोई सबूत नहीं मिला। 2006 में ईरान के जनरल अलीरेजा असगरी को मोसाद ने निशाने पर लिया। वह ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड्स की कुद्स फोर्स में रह चुका था और रक्षा उपमंत्री के पद तक पहुंचा था। उसके हिजबुल्लाह के नेताओं से भी करीबी संबंध थे। दिसंबर 2006 में असगरी तुर्किये के इस्तांबुल शहर के एक होटल में ठहरा। इसके बाद वह अचानक लापता हो गया। इजराइल ने इस मामले में अपनी भूमिका से इनकार किया। लेकिन न्यूयॉर्क टाइम्स से बात करने वाले तीन पूर्व अमेरिकी अधिकारियों ने बताया कि मोसाद के एजेंटों ने उसे अगवा किया, कई हफ्तों तक पूछताछ की और फिर उसकी हत्या कर दी। एक पूर्व अमेरिकी अधिकारी के मुताबिक, असगरी से एक जहाज पर पूछताछ की गई और बाद में उसका शव काला सागर में फेंक दिया। उससे रॉन अराद के बारे में जानकारी हासिल करने की कोशिश की गई थी लेकिन उसके पास ऐसी कोई जानकारी नहीं थी। 2021 में दूसरे ईरानी जनरल को भी अगवा कियाः- इजराइल को जब असगरी से कोई जानकारी नहीं मिली तो उसने ईरान के एक और जनरल अब्दुल्ला साबेरी को निशाना बनाया। सितंबर 2021 में साबेरी सीरिया की राजधानी दमिश्क के एक राजनयिक इलाके में सुबह टहलने निकला था। मोसाद के एजेंटों ने सामान ढोने वाले कर्मचारी बनकर इलाके में प्रवेश किया। वे एक बड़े फ्रिज के डिब्बे के साथ उसका इंतजार कर रहे थे। जैसे ही साबेरी उनके पास से गुजरा एजेंटों ने उसे पकड़ लिया, बेहोश किया और डिब्बे में डालकर एक सफेद वैन में ले गए। इसके बाद उसे इजराइल ले जाकर पूछताछ की गई। ईरानी और सीरियाई अधिकारियों के



मुताबिक पूछताछ में उससे सिर्फ एक ही सवाल किया गया- रॉन अराद के बारे में उसे क्या पता है? काफी देर तक पूछताछ के बाद उसे दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में एक सड़क पर छोड़ दिया गया। बाद में साबेरी ने यातना दिए जाने का आरोप लगाया। पायलट से जुड़ी रिपोर्ट नेतन्याहू को भी मिलीः-न्यूयॉर्क टाइम्स की जांच के मुताबिक इजराइल की खुफिया एजेंसियों को कई बार ऐसे संकेत मिले थे कि अराद को ईरान नहीं ले जाया गया था। 2006 में इजराइल की घरेलू खुफिया एजेंसी शिन बेट के प्रमुख युवाल डिस्किन ने मामले की नए सिरे से जांच कराई। जांच में सामने आया कि ईरान से जुड़े पुराने दावे गलत थे। टीम का मानना था कि अराद की मौत लेबनान के नबी चित गांव में ही दिसंबर में एक कारोबारी से मिलने के लिए घर से निकला था, लेकिन फिर वापस नहीं लौटा।

लेबनानी अधिकारियों को शक है कि इजराइली एजेंटों ने उसे अगवा किया था। हालांकि, इजराइल ने इस बारे में कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया। इसके कुछ महीने बाद इजराइली सैनिकों ने नबी चित गांव में अभियान चलाया। उन्होंने वहां के एक कब्रिस्तान में अराद के शव की तलाश की लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। न्यूयॉर्क टाइम्स के मुताबिक, इजराइल के पूर्व अधिकारी अवी कालो ने कहा कि देश को 20 साल पहले ही नबी चित गांव में उसकी तलाश शुरू कर देनी चाहिए थी। ईरान को जिम्मेदार मानने के चलते जांच गलत दिशा में चली गई।

प्रिंस विलियम ने मुंबई में खेला गली क्रिकेट,मेट्रो में सफर करेंगे-18 नवंबर को पीएम मोदी से मिलेंगे

मुंबई।सचिन, आलिया और श्रेया घोषाल भी होंगे शामिलः-



अर्थशॉट प्राइज की अवॉर्ड नाइट में क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर, अभिनेत्री आलिया भट्ट और अभिनेता रामी मालेक शामिल होंगे। फिल्ममेकर करण जौहर कार्यक्रम को होस्ट करेंगे। गायिका श्रेया घोषाल ब्रिटिश बैंड टेक दैट के साथ प्रस्तुति देंगी। यह बैंड पहली बार भारत में परफॉर्म करेगा। मुंबई की संगीतकार मर्लिन डी'सूजा के नेतृत्व में अर्थशॉट ऑर्केस्ट्रा भी प्रस्तुति देगा। इसके अलावा भारत का पहला ऑल-फीमेल हिप-हॉप ग्रुप वाइल्ड वाइल्ड वुमन भी परफॉर्म करेगा। भारत ने दिए सबसे ज्यादा विजेता और फाइनलिस्टः- अर्थशॉट प्राइज के मुताबिक, अब तक भारत से सबसे ज्यादा विजेता और फाइनलिस्ट चुने गए हैं। यह पुरस्कार जलवायु परिवर्तन, कचरे, वायु प्रदूषण, समुद्रों के संरक्षण और पेड़-पौधों व जीव-जंतुओं को बचाने से जुड़े समाधानों के लिए दिया जाता है। अर्थशॉट प्राइज के सीईओ जेसन नॉफ ने कहा कि मुंबई में होने वाला समारोह भारत के पर्यावरण से जुड़े काम, नई सोच और संस्कृति को दुनिया के सामने लाने का बड़ा मौका है। उनके मुताबिक, इस बार पुरस्कार समारोह में अब तक का सबसे बड़ा स्कूल कार्यक्रम और कई खास प्रस्तुतियां होंगी। मुंबई के बाद दिल्ली जाकर मोदी से मिलेंगेः- बई का दौरा पूरा करने के बाद प्रिंस विलियम और केट 18 नवंबर को दिल्ली जाएंगे।

यहां वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात करेंगे। इसके साथ ही उनका भारत दौरा खत्म हो जाएगा। ब्रिटेन के कार्यवाहक हाई कमिश्नर ने कहा कि यह दौरा दोनों देशों के लोगों के बीच पुराने रिश्तों को मजबूत करने का मौका है। भारत और ब्रिटेन टेक्नोलॉजी, निवेश, स्वच्छ ऊर्जा, शिक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ा रहे हैं।

पीएम मोदी आसियान समिट के लिए फिलीपींस रवाना,ईस्ट एशिया समिट में भी हिस्सा लेंगे

समुद्री सुरक्षा, व्यापार और जलवायु परिवर्तन पर होगी चर्चा

नयी दिल्ली।साल 2027 में दोनों के बीच बातचीत शुरू होने



वेः 35 साल और मजबूत रणनीतिक साझेदारी के 5 साल पूरे होंगे। ईस्ट एशिया समिट में 19 देशों के नेता होंगे शामिलः- 17 नवंबर को होने वाली भारत-आसियान समिट में भारत और आसियान के 11 सदस्य देश शामिल होंगे। इसमें दोनों पक्ष अपने रिश्तों की समीक्षा करेंगे। साथ ही 2026 से 2030 तक के लिए बने प्लान पर चर्चा करेंगे। इसमें व्यापार, सुरक्षा और दूसरे क्षेत्रों में साथ काम करने की योजनाएं शामिल हैं। इसी दिन ईस्ट एशिया समिट भी होगी। इसमें आसियान के 11 देशों के अलावा भारत, चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, अमेरिका, रूस, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड शामिल होंगे। यानी इस बैठक में कुल 19 देश हिस्सा लेंगे। इसमें एशिया और दुनिया से जुड़े बड़े मुद्दों पर बात होगी। आसियान ने तुर्किये को 12वां डायलॉग पार्टनर बनायाः-आसियान ने तुर्किये को अपना 12वां डायलॉग पार्टनर बनाया है। अब तुर्किये इस संगठन के साथ नियमित बातचीत कर सकेगा और अलग-अलग मुद्दों पर मिलकर काम कर सकेगा। वहीं, डेनमार्क, जर्मनी और कतर को कुछ खास क्षेत्रों में सहयोग के लिए पार्टनर बनाया गया है। समिट में डिजिटल कारोबार से जुड़ा समझौता 2026 के अंत तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। इससे सदस्य देशों के बीच ऑनलाइन कारोबार और डिजिटल सेवाओं को बढ़ावा मिलेगा। बैठक में फिलीपींस ने इलेक्ट्रिक ट्राइसाइकिल के साथ अपने खानपान और संस्कृति से जुड़ी प्रदर्शनी भी लगाई है।

एनवीडिया के सीईओ पद पर लौट सकते हैं जेन्सन हुआंग, मस्क समेत कई दिग्गज समर्थन में उतरे

बीजिंग। वह एनवीडिया की कर्मचारी बताई गई हैं। हालांकि,



रिपोर्ट में उनकी पहचान नहीं बताई गई। एलिस के साथ संबंधों की खबर सामने आने के बाद हुआंग ने कंपनी के कर्मचारियों को एक संदेश भेजा था। इसमें उन्होंने माना था कि वे अपनी पत्नी के प्रति वफादार नहीं रहे। उन्होंने लिखा था, 'मेरे इस कदम से मेरी पत्नी और बच्चों को गहरा दुख पहुंचा है। मुझे इसका पछतावा है। मेरी जिम्मेदारी आप सभी का भरोसा बनाए रखने की थी, लेकिन मैं इसमें नाकाम रहा।' इसके बाद 12 नवंबर को उन्होंने सीईओ पद छोड़ दिया। हालांकि, वॉल स्ट्रीट जर्नल की रिपोर्ट में दावा किया गया था कि उन्होंने खुद इस्तीफा नहीं दिया था, बल्कि कंपनी के बोर्ड ने उन्हें पद से हटाने का फैसला किया था। चीनी जासूस से संबंधों की भी जांचः- एलिस हुआंग पर चीन की खुफिया एजेंसी से जुड़े होने के आरोपों के बाद अमेरिकी जांच एजेंसियां भी मामले की पड़ताल कर रही हैं। जांच में यह पता लगाने की कोशिश हो रही है कि क्या एलिस ने एनवीडिया के एडवांस एआई चिप चीन पहुंचाए थे या हुआंग से कंपनी की कोई गोपनीय जानकारी हासिल की थी। अमेरिकी न्याय विभाग भी एलिस से जुड़े मामलों की जांच कर रहा है। अमेरिकी संसद ने 18 नवंबर को एलिस को बंद कमरे में होने वाली बैठक में जानकारी देने के लिए बुलाया है। वहीं, एनवीडिया का बोर्ड भी अपने स्तर पर मामले की जांच कर रहा है। अमेरिकी वित्त मंत्री ने भी उठाए सवालः- अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने रविवार को एनवीडिया के नेतृत्व में बड़े बदलाव की मांग की। उन्होंने कंपनी से यह भी पूछा कि क्या उसने फर्जी कंपनियों के जरिए अमेरिकी निर्यात नियमों से बचकर चीन को अपने ताकतवर एआई चिप बेचे थे। बेसेंट का कहना है कि कंपनी को साफ करना चाहिए कि उसने अमेरिका के निर्यात नियमों का पालन किया या नहीं। उनके मुताबिक, यह मामला हुआंग के निजी विवाद से भी ज्यादा गंभीर है। फिलहाल अंतरिम सीईओ संभाल रही हैं कंपनीः- हुआंग के पद छोड़ने के बाद कंपनी की सीएफओ कोलेट क्रेस को अंतरिम सीईओ बनाया गया है। वे मैनेजमेंट टीम के साथ कंपनी का कामकाज संभाल रही हैं। इस बीच एनवीडिया के बोर्ड ने नए सीईओ की तलाश में चिप कंपनी आर्म के प्रमुख रेने हास से भी संपर्क किया है। हालांकि, बोर्ड ने कहा है कि नए सीईओ को चुनने की कोई औपचारिक प्रक्रिया शुरू नहीं हुई है। हुआंग के पास कंपनी की इतनी हिस्सेदारी नहीं है कि वे बोर्ड के फैसले को खुद बदल सकें। ऐसे में उनकी वापसी का फैसला बोर्ड को ही करना होगा।

शेख हसीना के गृहजनपद गोपालगंज में हिंसा भड़की,गाड़ी जलाई, पुलिस चौकी पर हमला

ढाका। भारत ने माना है कि उसे हसीना को वापस भेजने की



मांग मिली है, लेकिन अभी इस पर कोई फैसला नहीं लिया है। शुक्रवार को विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा था कि यह कानूनी मामला है और इस पर कानून के हिसाब से ही फैसला होगा। हिंसा के बाद जिले के बड़े अधिकारी हटाए गएः- गोपालगंज में हिंसा के बाद सरकार ने जिले के उपायुक्त और पुलिस अधीक्षक को उनके पद से हटा दिया। गृह मंत्री सलाहुद्दीन अहमद ने कहा कि पुलिस और दूसरी सुरक्षा एजेंसियां तोड़फोड़ और हिंसा रोकने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। गोपालगंज में दंगा रोकने वाली पुलिस के साथ बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश के जवानों को भी तैनात किया गया है। प्रदर्शन में बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल हुईं।प्रधानमंत्री तारिक रहमान ने कैबिनेट बैठक बुलाईः-गोपालगंज की हिंसा पर रविवार को प्रधानमंत्री तारिक रहमान ने कैबिनेट बैठक की। उन्होंने संसद में अपनी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से भी मुलाकात की। बांग्लादेश के अखबार प्रोथोम आलो के मुताबिक, बैठक में शामिल बीएनपी नेताओं ने बताया कि तारिक रहमान ने पार्टी कार्यकर्ताओं से इलाके में सक्रिय रहने को कहा है।अखबार ने गृह मंत्रालय के एक अधिकारी के हवाले से बताया कि सरकार हालात को बिगड़ने नहीं देगी।

मौत की सजा देने के खिलाफ यूएन में प्रस्ताव पास,भारत समेत 33 देशों ने विरोध किया

न्यूयॉर्क। संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) में दुनिया भर में मौत की सजा पर रोक लगाने का प्रस्ताव पारित हो गया है। शुक्रवार को हुए मतदान में 133 देशों ने इसके समर्थन



में वोट दिया, जबकि भारत समेत 33 देशों ने विरोध किया। 16 देश वोटिंग से दूर रहे। भारत ने कहा कि दुनिया में मौत की सजा खत्म करने को लेकर कोई सहमति नहीं है। कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के बाद दी जाने वाली फांसी को 'सरकार की ओर से की गई हत्या' कहना गलत है। यह प्रस्ताव मेक्सिको ने पेश किया था। इसमें सभी देशों से फांसी पर रोक लगाने और धीरे-धीरे मौत की सजा खत्म करने की अपील की गई थी। भारत के अलावा अमेरिका, चीन, पाकिस्तान, जापान, ईरान और सऊदी अरब ने भी इसका विरोध किया। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन की प्रथम सचिव भाविका मंगलानंदन ने कहा कि दुनिया के देशों के बीच मौत की सजा खत्म करने पर कोई सहमति नहीं है। हर देश को अपने कानून और सजा तय करने का अधिकार है। उन्होंने कहा, 'अंतरराष्ट्रीय कानून कुछ शर्तों के साथ मौत की सजा देने की इजाजत देता है। भारत में पूरी कानूनी प्रक्रिया के बाद ही यह सजा दी जाती है। ऐसे में इसे सरकार की ओर से की गई हत्या कहना गलत है।' भाविका ने यह भी कहा कि कुछ लोग अपनी निजी सोच को अंतरराष्ट्रीय कानून के तौर पर पेश करने की कोशिश कर रहे हैं। भारत ने 2016, 2018 और 2024 में भी ऐसे प्रस्तावों का विरोध किया था। भारत में मौत की सजा कानून का हिस्सा है, लेकिन यह हर अपराध में नहीं दी जाती। सुप्रीम कोर्ट के नियम के मुताबिक, इसे सिर्फ सबसे गंभीर मामलों यानी 'रेयरेस्ट ऑफ रेयर' मामलों में ही दिया जा सकता है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में बताया कि फांसी देने से पहले कई कानूनी प्रक्रियाओं का पालन किया जाता है। आरोपी को तब तक निर्दोष माना जाता है, जब तक उसका अपराध साबित न हो जाए। निचली अदालत से मौत की सजा मिलने पर ऊपरी अदालत से उसकी पुष्टि जरूरी होती है। अदालत सजा कम करने की वजहों पर भी विचार करती है। संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव में कहा गया कि 18 साल से कम उम्र में अपराध करने वाले लोगों को मौत की सजा नहीं दी जानी चाहिए। अगर अपराध के समय किसी व्यक्ति की उम्र तय नहीं हो पाती है, तब भी उसे फांसी नहीं दी जानी चाहिए। इसके अलावा गर्भवती महिलाओं, मानसिक या बौद्धिक रूप से दिव्यांग लोगों और बुजुर्गों को भी मौत की सजा से छूट देने की अपील की गई। प्रस्ताव में देशों से उन अपराधों की संख्या कम करने को भी कहा गया, जिनके लिए फांसी दी जा सकती है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र के एक दूसरे प्रस्ताव के एक हिस्से पर भी विरोध जताया। यह प्रस्ताव बिना कानूनी प्रक्रिया के की जाने वाली हत्याओं और मनमाने तरीके से लोगों को मारने से जुड़ा था। भारत की आपत्ति इस बात पर थी कि इसमें मौत की सजा को यातना और अमानवीय व्यवहार से जोड़ा गया था। भाविका मंगलानंदन ने कहा कि अदालत की कानूनी प्रक्रिया के बाद दी जाने वाली सजा और बिना कानूनी प्रक्रिया के की जाने वाली हत्या को एक जैसा नहीं माना जा सकता। हालांकि, भारत ने गैरकानूनी हत्याओं और मानवाधिकारों के उल्लंघन को रोकने वाले इस दूसरे प्रस्ताव का समर्थन किया। उसने सिर्फ उस पैराग्राफ से खुद को अलग रखा, जिसमें मौत की सजा को यातना से जोड़ा गया था। अमेरिका ने भी मौत की सजा पर रोक लगाने वाले प्रस्ताव के खिलाफ वोट किया।

पाक सेना का बागी बलूच लिबरेशन आर्मी का चीफ,फिदायीन मजीद ब्रिगेड को ट्रेनिंग दी

2025 में पाकिस्तान ने कहा था- हमले में मारा गया

क्वेटा।सुरक्षा मामलों के जानकारों के मुताबिक पाकिस्तानी सेना में काम करने का उनका अनुभव संगठन के लिए फायदेमंद हो सकता है। उन्हें सेना की रणनीति, काम करने के तरीके और जवाबी कार्रवाई से जुड़ी जानकारी है। ऐसे में बीएलए इस अनुभव का इस्तेमाल पाकिस्तान के खिलाफ कर सकती है। रहमान ने बशीर जेब की जगह लीः- रहमान गुल ने बशीर जेब बलूच की जगह ली है, जो 2018 से संगठन की कमान संभाल रहा था। उसके नेतृत्व में बीएलए ने पाकिस्तान में कई बड़े हमले किए। 3 नवंबर को संगठन ने बशीर को पद से हटाने का ऐलान किया। बीएलए ने कहा कि उसके नियमों के मुताबिक कोई भी व्यक्ति जीवनभर इस पद पर नहीं रह सकता। हालांकि, एक रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तानी सेना के खिलाफ नाकाम ऑपरेशन और महिला आत्मघाती हमलावरों के इस्तेमाल को लेकर संगठन उससे नाराज था। बलूच लिबरेशन आर्मी



(बीएलए) पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत को अलग देश बनाने की मांग करने वाला सशस्त्र अलगाववादी संगठन है। इसकी शुरुआत करीब 2000 में हुई थी। बलूचिस्तान पाकिस्तान का सबसे बड़ा प्रांत है। यहां प्राकृतिक गैस, तांबा, सोना और कोयले जैसे खनिजों के बड़े भंडार हैं। इसके बावजूद यह पाकिस्तान के सबसे पिछड़े इलाकों में शामिल है। बीएलए का आरोप है कि पाकिस्तान सरकार बलूचिस्तान के प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल करती है, लेकिन वहां के लोगों को उनका उचित हिस्सा नहीं देती। संगठन पाकिस्तान सरकार पर राजनीतिक भेदभाव और बलूच लोगों के अधिकारों का उल्लंघन करने का भी आरोप लगाता है।बीएलए चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) और इससे जुड़ी परियोजनाओं का भी विरोध करता है। उसका आरोप है कि इन परियोजनाओं से बलूचिस्तान के संसाधनों का फायदा स्थानीय लोगों के बजाय बाहरी ताकतों को मिल रहा है।

इजराइल ने हमास के टॉप कमांडर को सड़क पर एयरस्ट्राइक से मार गिराया

तेल अवीव।उत्तरी गाजा में हवाई हमले में मारा गया। 10 सितंबर 2026, मोहम्मद अब्देल सलाम अल-यालूरीः हमास की वरिष्ठ नेतृत्व परिषद का सदस्य और खान यूनिस ब्रिगेड का कमांडर था। हमास ने कहा कि 7 अक्टूबर के हमले की योजना बनाने में उसकी अहम भूमिका थी। इजराइली हमले में उसकी मौत हुई। 26 सितंबर 2026, साहेर निदाल लत्फीः इजराइली सेना ने गाजा के नुसेरात इलाके में हवाई हमला कर उसे मार गिराया। सेना के मुताबिक, 7 अक्टूबर 2023 को हमास के लड़ाकों ने नोआ अर्गमानी और उनके साथी अविनातन ओर को अगवा किया था। दोनों नोवा म्यूजिक फेस्टिवल से अगवा किए गए थे। उस समय सक्र ही मोटरसाइकिल चला रहा था। इजराइल का आरोप था कि लत्फी हमास के लिए हथियार पहुंचाता था।

वह नए हमलों की तैयारी में भी शामिल था। 7 अक्टूबर 2023 को हमास ने इजराइल में बॉर्डर एरिया पर एक म्यूजिक फेस्टिवल के दौरान हमला किया था। इस हमले में करीब 1200 लोग मारे गए थे, जबकि 251 को बंधक बना लिया गया था। यह हमला इजराइल के लिए दशकों में सबसे गंभीर सुरक्षा घटनाओं में से एक था।

इसके बाद इजराइल ने गाजा में हमास के खिलाफ बड़ा सैन्य अभियान शुरू किया। देखते ही देखते यह संघर्ष पूरे पश्चिम एशिया के लिए बड़े संकट में बदल गया।

हमास ने इसे 'अल-अक्सा फ्लड' ऑपरेशन नाम दिया था। इसके जवाब में इजराइल ने कुछ घंटे बाद हमास के खिलाफ 'सोर्ड्स ऑफ आयरन' ऑपरेशन शुरू किया था।

मीनाक्षी शेषाद्रि हुई 63 की- सनी के साथ धर्मेंद्र-हेमा जैसी जोड़ी, बताया- 'डकैत' का लिप-टू-लिप किस सीन सेंसर ने हटवाया

मुंबई। फिल्म 'हीरो' से पहचान बनाने वाली मीनाक्षी शेषाद्रि आज 63 साल की हो गई हैं। 80 और 90 के दशक में उन्होंने 'डकैत', 'घर हो तो ऐसा', 'घायल' और 'दामिनी' जैसी फिल्मों से दर्शकों के दिलों पर



राज किया। सनी देओल के साथ उनकी जोड़ी को दर्शकों ने खूब पसंद किया। एक इंटरव्यू में मीनाक्षी ने अपनी और सनी की जोड़ी को धर्मेंद्र-हेमा मालिनी की जोड़ी जैसा बताया। उन्होंने 'डकैत' के लिपलॉक सीन का किस्सा भी सुनाया, जिसे सेंसर बोर्ड ने हटवा दिया था। उन्होंने आनिल कपूर वेऽ साथ कॉम्पिटिशन, फ्लॉप फिल्मों के बाद 'पनौती' कहलाने और अमिताभ बच्चन से पहली मुलाकात के किस्से भी साझा किए। करीब 30 साल बाद वह अभिनय की दुनिया में दूसरी पारी शुरू करने की तैयारी कर रही हैं। मीनाक्षी शेषाद्रि ने करियर में सफलता और असफलता दोनों दौर देखे। फरीदून शाहरयार को दिए इंटरव्यू में उन्होंने बताया था कि एक समय उनकी लगातार कई फिल्में फ्लॉप हुई थीं। तब गॉसिप मैगजीन और कुछ पत्रकार उन्हें 'जिंक्स' यानी पनौती कहने लगे थे। लोगों का मानना था कि मीनाक्षी की फिल्म नहीं चलेगी। मीनाक्षी ने इन बातों को खुद पर हावी नहीं होने दिया। उन्होंने कहा कि मुश्किल समय में भगवद्गीता की सीख ने उन्हें सहारा दिया। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि कर्म करो, फल की चिंता मत करो। फल की इच्छा से कर्म नहीं करना चाहिए, बल्कि कर्म को ही अपना सब कुछ मानना चाहिए। मीनाक्षी ने इसी सोच के साथ काम जारी रखा। 1990 में उनकी दो बड़ी फिल्में 'घायल' और 'घर हो तो ऐसा' सफल रहीं। मीनाक्षी बताती हैं कि पहले वह इन फिल्मों की सफलता का पूरा क्रेडिट लेने से हिचकिचाती थीं। अब वह खुलकर कहती हैं कि 'घायल' और 'घर हो तो ऐसा' उनकी वजह से हिट हुई थीं। आठ साल तक बॉक्स ऑफिस पर टॉप पर रहीं, फिर भी नहीं की अपनी तारीफः-1985 से 1993 तक मीनाक्षी के करियर का सबसे शानदार दौर रहा। करीब आठ साल तक वह बॉक्स ऑफिस



पर लगातार सफल अभिनेत्रियों में शामिल रहीं। उन्होंने कभी अपनी उपलब्धियों पर खुलकर बात नहीं की। मीनाक्षी बताती हैं कि उस दौर में श्रीदेवी, माधुरी दीक्षित और जूही चावला जैसी शानदार अभिनेत्रियां भी काम कर रही थीं। वह खुद को खुशकिस्मत मानती हैं कि उन्हें इन प्रतिभाशाली अभिनेत्रियों के दौर का हिस्सा बनने का मौका मिला। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि हम चारों ने मिलकर एक ऐसा प्रभाव बनाया, जिसे आज भी याद किया जाता है।' मीनाक्षी ने बताया कि उनका स्वभाव विनम्र और अंतर्मुखी रहा है। उन्हें अपनी तारीफ करना पसंद नहीं था। अब दूसरी पारी में वह अपने बारे में खुलकर बात करने लगी हैं। स्कूल बस से देखा अमिताभ-रेखा का शूट, सालों बाद अमिताभ के साथ बाइक पर बैठीं:- मीनाक्षी ने अमिताभ बच्चन से जुड़ा एक किस्सा साझा किया। जब वह 12वीं कक्षा में थीं, तब स्कूल बस से घर लौट रही थीं। इसी दौरान दिल्ली की सड़कों पर अमिताभ बच्चन और रेखा मोटरसाइकिल पर फिल्म 'सिलसिला' की कर रहे थे। स्कूल बस में बैठे बच्चे दोनों सितारों को देखकर उत्साहित हो गए। वे चाहते थे कि शूटिंग रुके और उन्हें पसंदीदा कलाकारों से ऑटोग्राफ मिल जाए, लेकिन शूटिंग शुरू हो चुकी थी। कई साल बाद मीनाक्षी को अमिताभ बच्चन के साथ काम करने का मौका मिला। फिल्म 'शहंशाह' के एक गाने की शूटिंग के दौरान वह उनके पीछे मोटरसाइकिल पर बैठी थीं। तब उन्होंने अमिताभ बच्चन से कहा कि कुछ साल पहले उन्होंने उन्हें रेखा के साथ बाइक पर देखा था। आज वह खुद अमिताभ के पीछे बैठी हैं और रेखा की जगह ले चुकी हैं। मीनाक्षी के मुताबिक, अमिताभ ने उन्हें मेहनत करने और अच्छा काम करते रहने की सलाह दी। वह सेट पर रिहर्सल और अनुशासन को बहुत महत्व देते थे। मीनाक्षी ने उनसे सीखा कि कलाकार को सह-कलाकार के काम करने के तरीके के मुताबिक खुद को ढालना चाहिए। 'दामिनी' के बाद तय किया कि अब टाइमपास रोल नहीं करूंगीः- 'घायल' और 'घर हो तो ऐसा' की सफलता के बाद मीनाक्षी में किरदारों को लेकर नया आत्मविश्वास आया। वह फिल्मों में सिर्फ नाम के लिए काम नहीं करना चाहती थीं। वह ऐसे किरदार नहीं करना चाहती थीं, जिनमें हीरो के साथ तीन गाने हों और अभिनेत्री सिर्फ क्लाइमैक्स में दिखाई दे। वह अपनी भूमिका को फिल्म में बराबर की अहमियत देना चाहती थीं। उस दौर में कई एक्शन फिल्में बन रही थीं। रोमांटिक फिल्मों में ज्यादातर भूमिकाएं माधुरी दीक्षित और जूही चावला जैसी अभिनेत्रियों को मिल रही थीं। मीनाक्षी को गंभीर और ड्रामेटिक किरदार मिल रहे थे। मीनाक्षी लंबे समय से 'दामिनी' जैसी फिल्म का इंतजार कर रही थीं। उन्हें लगा था कि यह फिल्म करियर को नई दिशा देगी। लेकिन उन्हें अंदाजा नहीं था कि

इसके बाद निजी जिंदगी में ऐसा बदलाव आएगा कि वह अभिनय से दूरी बना लेंगी। मीनाक्षी के मुताबिक, 'दामिनी' समाज की गंभीर समस्याओं को सामने लाने वाली कहानी थी। इसमें महिलाओं के खिलाफ अपराध, सामाजिक असमानता, भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था, मेडिकल सिस्टम और न्याय व्यवस्था की खामियां दिखाई गई थीं। उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र के कई हिस्सों, खासकर पुणे में महिलाओं की सुरक्षा के लिए 'दामिनी पथक' नाम से पुलिस की विशेष टीम बनाई गई। फिल्म के बाद महिलाओं की सुरक्षा को लेकर जागरूकता बढ़ाने की जरूरत भी गंभीरता से महसूस की गई। 'हीरो' पहले कमल हासन के साथ बननी थी, बाद में जैकी-मीनाक्षी को मिला मौकाः-मीनाक्षी की यादगार फिल्मों में 'हीरो' शामिल है। इसकी कास्टिंग को लेकर भी एक दिलचस्प कहानी है। मीनाक्षी ने बताया कि सुभाष घई ने शुरुआत में फिल्म के लिए कमल हासन को साइन किया था, लेकिन कुछ वजहों से उन्हें हटा दिया गया। इसके बाद सुभाष घई ने नए चेहरों जैकी श्रॉफ और मीनाक्षी शेषाद्रि के साथ फिल्म बनाने का फैसला किया। मीनाक्षी ने बताया कि मनोज कुमार की फिल्म 'पेंटर बाबू' की शूटिंग के दौरान सुभाष घई ने उनके रशेज देखे थे। उन्हें लगा कि यह लड़की डांस कर सकती है और इसमें मासूमियत है। इसी आधार पर उन्होंने मीनाक्षी को राधा के किरदार के लिए चुन लिया। मीनाक्षी को बिना स्क्रीन टेस्ट के फिल्म में साइन कर लिया गया था। 'पेंटर बाबू' रिलीज हुई तो बॉक्स ऑफिस पर नहीं चली। लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि इस लड़की की पहली फिल्म फ्लॉप हो गई। हालांकि, मीनाक्षी के मुताबिक, किसी ने उनके अभिनय पर सवाल नहीं उठाया और दर्शकों का प्यार मिलता रहा। 'हीरो' रिलीज होने के बाद शुरुआत में धीमी रही, लेकिन तीसरे हफ्ते से शानदार प्रदर्शन किया। चेन्नई में भी यह फिल्म करीब एक साल तक चली। बाद में दक्षिण भारतीय भाषाओं में इसका रीमेक बना और वहां भी सफलता मिली।मीनाक्षी मनोज कुमार को पहला गुरु और सुभाष घई को दूसरा गुरु मानती हैं। गाने की शूटिंग के दौरान उंगली में घुसा बड़ा कांटा, दर्द के बावजूद काम नहीं रोकाः- मीनाक्षी ने काम के प्रति समर्पण का एक और किस्सा सुनाया। फिल्म 'हीरो' के गाने 'तू मेरा हीरो है' की शूटिंग



मनोरी में हो रही थी। वहां चारों तरफ कैक्टस और कांटेदार झाड़ियां थीं। इसी दौरान उनकी उंगली में बड़ा कांटा घुस गया। उन्होंने शूटिंग नहीं रुकवाई। मीनाक्षी ने बताया कि उंगली में कांटा फंसा होने के बावजूद वह जैकी श्रॉफ के साथ रोमांटिक एक्सप्रेशन देते हुए गाने की शूटिंग करती रहीं। पैकअप के बाद ही किसी ने कांटा निकाला। उन्होंने कहा कि उनका ध्यान काम समय पर पूरा करने पर रहता था। मुश्किलों के बजाय वह लक्ष्य पर ध्यान देती थीं। मीनाक्षी ने इसका श्रेय खेल और डांस की ट्रेनिंग को भी दिया। वह ट्रैक, जैवलिन, हाई जंप और लॉन्ग जंप में हिस्सा लेती थीं। उनकी मां डांस गुरु थीं। उन्होंने बचपन से अनुशासन, मेहनत और काम को पूजा मानने की सीख दी। सनी देओल के साथ जोड़ी धर्मेंद्र-हेमा जैसी, 'डकैत' का लिपलॉक सीन सेंसर ने हटवायाः-मीनाक्षी शेषाद्रि ने सनी देओल के साथ 'डकैत', 'घायल' और 'दामिनी' जैसी फिल्मों में काम किया। दोनों की ऑनस्क्रीन केमिस्ट्री दर्शकों को पसंद आई। इंटरव्यू में मीनाक्षी ने अपनी और सनी की जोड़ी की तुलना धर्मेंद्र-हेमा मालिनी की जोड़ी से की। उन्होंने कहा कि एक तरफ पंजाबी जाट थे और दूसरी तरफ दक्षिण भारतीय क्लासिकल डांसर। दोनों की पृष्ठभूमि अलग थी, लेकिन पर्दे पर जोड़ी खूब जमी। आज भी लोग उनसे मिलकर सनी देओल के साथ उनकी जोड़ी की तारीफ करते हैं। 'डकैत' का किस्सा बताते हुए मीनाक्षी ने कहा कि फिल्म के गाने 'किस कारण नैया डोली' की शुरुआत में सनी और उनके बीच लिप-टू-लिप किस फिल्माया गया था। दर्शकों ने फिल्म में यह सीन नहीं देखा। सेंसर बोर्ड ने फिल्म के कुछ हिंसक दृश्यों को मंजूरी देने के बदले किसिंग सीन हटाने की शर्त रखी थी। आखिरकार यह सीन फिल्म से हटा दिया गया। मीनाक्षी ने बताया कि वह सनी के साथ ऐसे सीन करते हुए सहज थीं। उनके मुताबिक, डायरेक्टर किसी सीन को सही तरीके से फिल्माए तो वह पर्दे पर खूबसूरत और प्रभावशाली बन सकता है। विनोद खन्ना को सेट पर सुनाती थीं जोक्स, पिता भी पहुंचते थे शूटिंग परः-मीनाक्षी ने विनोद खन्ना के साथ दोस्ती का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि विनोद खन्ना आध्यात्मिकता में गहरी रुचि रखते थे और फिल्म इंडस्ट्री का हिस्सा भी थे। मीनाक्षी के मुताबिक, दोनों की अलग तरह की दोस्ती थी। वे सेट पर एक-दूसरे को मजेदार और शरारती जोक्स सुनाते थे। उन्होंने बताया कि उनके पिता को जोक्स सुनने का शौक था। विनोद खन्ना के साथ शूटिंग होने पर उनके पिता कहते थे कि वह सेट पर आएंगे, क्योंकि उन्हें वहां दोनों की बातें सुनना अच्छा लगता था। राजेश खन्ना के बारे में उन्होंने कहा कि उन्होंने कभी सुपरस्टार जैसा व्यवहार नहीं किया। तीन फिल्मों में साथ काम करने के दौरान उन्होंने मीनाक्षी को प्रोत्साहित किया और मेंटर की तरह मार्गदर्शन किया। अनिल कपूर से हेल्दी कॉम्पिटिशन, 7-8 फिल्मों में साथ कामः-मीनाक्षी ने अनिल कपूर के साथ रिश्ते और काम के अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि करियर में सबसे ज्यादा फिल्में उन्होंने अनिल कपूर के साथ कीं। दोनों ने करीब 7-8 फिल्मों में काम किया। मीनाक्षी के मुताबिक, उनके और अनिल के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा रहती थी। दोनों एक-दूसरे से बेहतर काम करना चाहते थे। यह दुश्मनी नहीं, बल्कि एक-दूसरे को बेहतर करने के लिए प्रेरित करती थी। उन्होंने कहा कि अनिल कपूर से उन्होंने सीखा कि फिल्म इंडस्ट्री में प्रतिस्पर्धा के बावजूद दोस्ताना व्यवहार कैसे बनाए रखा जा सकता है। अनिल कपूर की फिटनेस और काम के प्रति समर्पण की तारीफ करते हुए मीनाक्षी ने कहा कि वह खुद को महत्व देते हैं और उसी हिसाब से जिंदगी और काम संभालते हैं। उन्होंने मजाक में कहा कि वह आज भी अपनी उम्र में प्रेरणादायक हैं। 'दामिनी' और 'घातक' के बाद 30 साल तक फिल्मों से दूर रहीं, अब महिलाओं की नई छवि दिखाना चाहती हैंः- लंबे करियर के बाद मीनाक्षी ने फिल्म इंडस्ट्री से दूरी बना ली थी। वह करीब 30 साल तक अमेरिका में रहीं। अब भारत लौटकर फिर अभिनय की दुनिया में सक्रिय होने की तैयारी कर रही हैं। उन्होंने बताया कि पिछले तीन सालों में पुणे और मुंबई में रहते हुए कई स्क्रिप्ट सुनीं। खासतौर पर ओटीटी से जुड़े कई ऑफर भी मिले। मीनाक्षी के मुताबिक, आज पर्दे पर महिलाओं को दिखाने के तरीके में खालीपन नजर आता है। वह चाहती हैं कि महिलाओं के किरदार आइटम सॉन्ग या ग्लैमर तक सीमित न रहें, बल्कि उनकी असल जिंदगी, सोच, ताकत और पहचान भी दिखाई जाए। उन्होंने कहा कि भारतीय समाज में महिला-पुरुष के समीकरण बदलते रहे हैं। जब महिलाओं की स्थिति मजबूत रही, तब उसका असर फिल्मों में भी दिखा। इसी वजह से सिनेमा में 'मदर इंडिया' जैसे यादगार महिला किरदार सामने आए। मीनाक्षी ने कहा कि 'दामिनी' के बाद 30 सालों में कई अच्छी फिल्में और अभिनेत्रियां आई होंगी, लेकिन उन्हें पर्दे पर महिलाओं की ऐसी छवि का उदाहरण नहीं दिखा, जिसे वह बदलाव की शुरुआत मान सकें। अब वह खुद इस दिशा में काम करना चाहती हैं। उन्होंने साफ किया कि उनकी प्राथमिकता पहले अभिनय करना है। इसके बाद वह निर्देशन की ओर कदम बढ़ाना चाहेंगी। मीनाक्षी ने अपने अनुभव से कहा कि इंसान के लिए खुद पर विश्वास करना सबसे जरूरी है। उनका मानना है कि आत्मविश्वास व्यक्ति को मुश्किल दौर से निकालता है। वह आज भी खुद को संपूर्ण, खूबसूरत और सक्षम मानती हैं।

विवाद के बीच सेलेब्स छठ पूजा में पहुंचे,तमन्ना भी छठ के आयोजन में पहुंचीं,राज ठाकरे की आपत्ति के बीच सोनू सूद बोले- एक बिहारी 100 पर भारी

मुंबई। मुंबई में छठ पूजा को लेकर महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (एमएनएस) ने मुंबई के समुद्र



तटों पर छठ पूजा के आयोजन और भोजपुरी गाने बजाने पर सवाल उठाए और विरोध किया। विरोध के बीच एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया और एक्टर सोनू सूद समेत कई हस्तियां छठ पूजा के



आयोजनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। छठ पूजा के समापन पर तमन्ना भाटिया ने जुहू बीच पर श्रद्धालुओं के साथ पूजा में हिस्सा लिया। पूजा में शामिल लोगों से तमन्ना ने उनके लिए ठेकुआ बचाकर रखने की अपील भी की। सोनू सूद 15 नवंबर 2026 की शाम को जुहू बीच पर होटल पाम ग्रोव के पीछे आयोजित भव्य छठ महोत्सव में शामिल हुए। उन्होंने सोशल मीडिया पर वीडियो संदेश जारी कर देशभर के श्रद्धालुओं को इस पर्व में शामिल होने का न्योता दिया और उत्तर प्रदेश व बिहार के लोगों के योगदान की सराहना की। क्या था मनसे का बयान और विवाद कैसे शुरू हुआ? विवाद की शुरुआत मुंबई के गिरगांव चौपाटी और बाणगंगा तालाब में छठ पूजा के आयोजन को लेकर हुई। मनसे के मालाबार हिल विभाग अध्यक्ष दिनेश ज्ञानेश्वर पुंडे ने 13 नवंबर को मुंबई पुलिस और बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) को पत्र लिखकर इन जगहों पर छठ पूजा के दौरान पूजा सामग्री के विसर्जन पर रोक लगाने की मांग की थी। मनसे की मांग थी कि गणेशोत्सव और नवरात्रि की तरह छठ पूजा के दौरान भी विसर्जन को लेकर नियम लागू किए जाएं। इसके लिए पार्टी ने इन जगहों पर बैरिकेडिंग, अतिरिक्त सुरक्षा और निगरानी की मांग भी की थी। मनसे ने दावा किया था कि बीएमसी के डी वार्ड कार्यालय में हुई बैठक में अधिकारियों ने स्पष्ट किया था कि गिरगांव चौपाटी और बाणगंगा तालाब में छठ पूजा के लिए कोई अनुमति नहीं दी गई है। बॉम्बे हाईकोर्ट तक पहुंचा मामलाः-गिरगांव चौपाटी पर छठ पूजा आयोजित करने की अनुमति नहीं मिलने के बाद मिथिला छठ पूजा संघ ने बॉम्बे हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। 9 नवंबर 2026 को इस मामले की सुनवाई हुई। पुलिस ने कोर्ट को बताया कि



गिरगांव चौपाटी पर पहले से हाई पावर कमेटी के निर्देश लागू हैं। इनके तहत गणेशोत्सव, नवरात्रि, रामलीला, कृष्णलीला और क्रिसमस के अलावा अन्य कार्यक्रमों के लिए संबंधित विभागों की अनुमति जरूरी है। हाईकोर्ट ने संविधान के अनुच्छेद 25 का उल्लेख करते हुए कहा कि हर व्यक्ति को धर्म मानने और उसका पालन करने की स्वतंत्रता है, लेकिन यह स्वतंत्रता सार्वजनिक व्यवस्था, नैतिकता और स्वास्थ्य से जुड़ी शर्तों के अधीन है। कोर्ट ने इस स्तर पर पूजा के आयोजन के लिए कोई अतिरिक्त आदेश देने से इनकार कर दिया। राज ठाकरे ने भाजपा पर लगाया राजनीतिक फायदा उठाने का आरोपः-विवाद बढ़ने के बाद मनसे प्रमुख राज ठाकरे ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर भाजपा पर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा छठ पूजा के मुद्दे का इस्तेमाल महाराष्ट्र में मराठी और उत्तर भारतीय समुदायों के बीच तनाव पैदा करने के लिए कर रही है। राज ठाकरे के मुताबिक, सोशल मीडिया पर ऐसे वीडियो और रील्स प्रसारित किए जा रहे हैं, जिनमें छठ पूजा की परंपराओं को महाराष्ट्र में सांस्कृतिक दखल के रूप में दिखाया जा रहा है। उन्होंने मुंबई के रेलवे स्टेशनों पर भोजपुरी गाने बजाए जाने का भी विरोध किया। राज ठाकरे ने आरोप लगाया कि आगामी उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों को देखते हुए यह सब किया जा रहा है। उन्होंने उत्तर भारतीय और गुजराती समुदायों से भी राजनीतिक इस्तेमाल से बचने की अपील की।रेलवे स्टेशनों पर भोजपुरी गाने बजाने का मामला भी विवाद की वजह बना था। छठ पूजा से पहले मुंबई के कुछ रेलवे स्टेशनों पर भोजपुरी गाने बजाए गए थे। सेंट्रल रेलवे के प्रवक्ता ने बताया था कि त्योहार के दौरान चलाई जा रही स्पेशल ट्रेनों के समय उपलब्ध अतिरिक्त समय में ये गाने बजाए गए थे। मनसे और शिवसेना के नेताओं ने रेलवे के अनाउंसमेंट सिस्टम पर सवाल उठाए थे।

दिलजीत दोसांझ बोले- किसी के बाप का हिन्दोस्तान थोड़ी है,इंदौर प्रोग्राम से पहले मिली थी बम की धमकी

इंदौर। इंदौर में रविवार को पंजाबी सिंगर दिलजीत दोसांझ का कॉन्सर्ट हुआ। उन्होंने राहत इंदौरी का मशहूर शेयर पढ़ते हुए कहा- सभी का खून है



शामिल यहां की मिट्टी में। किसी के बाप का हिन्दोस्तान थोड़ी है। दिलजीत का ये शेर इंटरनेट पर वायरल है। इंदौर कॉन्सर्ट से पहले अलग-अलग संस्थानों को करीब 9 धमकी भरे ई-मेल मिले थे। इनमें आरडीएक्स विस्फोट की धमकी दी गई थी। इस पर पुलिस ने यहां बम डिस्पोजल टीम तैनात की थी। ड्रोन से भी निगरानी की जा रही थी। 7 करोड़ से ज्यादा के टिकट बिकने का दावाः-BookMyShow वेऽ मुताबिक, इंदौर शो में 7 करोड़ रुपए से ज्यादा के टिकट बिके। कॉन्सर्ट के टिकट 1,500 रुपए से शुरू हुए थे। सबसे महंगी GOAT टेबल 8 लाख रुपए और Born To Shine टेबल 5 लाख रुपए की थी। नगर निगम को आयोजन से 60 लाख रुपए से ज्यादा टैक्स मिला।



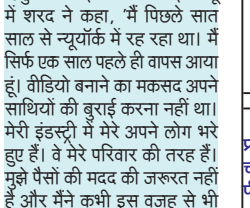
इससे पहले इंदौर कॉन्सर्ट रद्द होने की बात सामने आने पर दिलजीत ने लाइव आकर कहा था, 'मैं 15 तारीख को इंदौर आ रहा हूं। सबसे पहले हम आकर खाएंगे पोहा। 101फीसदी,फिर एनर्जी लेकर चक दे़ंगे चट्ट दे फट्टे। आपको फिक्र नहीं करनी है और न ही कोई खबर सुननी है।' पंजाबी सिंगर दिलजीत दोसांझ के दिल्ली और भोपाल वेऽ बाद 21 नवंबर को अहमदाबाद वेऽ नरेंद्र मोदी स्टेडियम में होने वाले कॉन्सर्ट से पहले विवाद खड़ा हो गया है। जिला बाल संरक्षण इकाई (डीसीपीयू) ने कॉन्सर्ट में बच्चों की एंट्री और गानों की सामग्री को लेकर चिंता जताई है। इकाई ने अहमदाबाद के पुलिस कमिश्नर को पत्र लिखकर कार्यक्रम में कुछ प्रतिबंध लगाने की मांग की है। यह कार्रवाई चंडीगढ़ निवासी प्रोफेसर डॉ. पंडितराव धरेनवर की ओर से दिए गए आवेदन के आधार पर की गई है।

दिलजीत बोले-'मेरे इंदौर आने और कार्यक्रम को रोकने की कई कोशिशें की गईं। ये महाकाल की धरती है और यहां आने से हमें कोई नहीं रोक सकता।' इंदौर जिला प्रशासन ने दिलजीत के चार गानों- 'पटियाला पैग', '5 तारा ठेके', 'जेब विचों अफीम' और 'जट्ट फायर करदा' पर आपत्ति जताते हुए उन्हें न गाने को कहा था। लेकिन, दिलजीत ने इनमें से 3 गाने 'पटियाला पैग', '5 तारा ठेके' और 'जट्ट फायर करदा' कॉन्सर्ट में गाए। दिलजीत ने 'खुदा गवाह', 'सांसों की माला' और 'किन्नी किन्नी' जैसे हिट गानों पर दर्शकों को झुमाया। रात 10 बजे आखिरी गाना गाकर शो खत्म हुआ। धमकी के मद्देनजर

सलमान खान ने करि शरद कपूर की आर्थिक मदद,सोनू सूद फिल्म देंगे, हॉलीवुड फिल्म भी मिली

सेक्शुअल हैरेस के आरोप लगने के बाद डिप्रेशन में थे

मुंबई। शाहरुख खान की फिल्म जोश में नजर आ चुके एक्टर शरद कपूर का एक वीडियो वायरल हो गया, जिसमें वह बेहद खराब हालत में नजर आए। एक्टर ने इंडस्ट्री से आर्थिक मदद मांगते हुए



काम देने की अपील की थी, जिसके बाद अब सलमान खान और सोनू सूद उनकी मदद के लिए आगे आए हैं। साथ ही शरद को एक हॉलीवुड फिल्म भी मिली है, जिसकी शूटिंग वह जनवरी से शुरू करेंगे। फिल्म फेडरेशन ने सोशल मीडिया के जरिए कन्फर्म किया है कि सलमान खान, शरद कपूर की आर्थिक मदद कर रहे हैं। वहीं आज सोनू सूद ने शरद कपूर से मुलाकात कर उनसे फिल्म की चर्चा की है। ऑल इंडिया सिने वर्कर्स एसोसिएशन ने एक पोस्ट जारी कर लिखा, ए.आई.सी.डब्लू.ए इस मुश्किल वक्त में अभिनेता शरद कपूर की आर्थिक मदद के लिए आगे आने पर सलमान खान का तहे दिल से शुक्रिया अदा करता है। इस तरह का कदम न सिर्फ शरद कपूर जी को, बल्कि उन सभी कलाकारों को उम्मीद देता है, जिन्हें अपने मुश्किल दिनों में भुला दिए जाने का डर रहता है। आगे लिखा गया है, ए.आई.सी.डब्लू.ए शरद कपूर जी से संपर्क करने के लिए सोनू सूद का भी दिल से आभार व्यक्त करता है। बताया जा रहा है कि सोनू सूद जी ने उनसे मुलाकात की है और एक ऐसे प्रोजेक्ट पर चर्चा की है, जो उन्हें दोबारा काम पर लौटा सकता है। इसके अलावा, उन्होंने शरद कपूर के लिए मेडिकल सहायता का भी इंतजाम किया है। हिंदुस्तान टाइम्स को दिए इंटरव्यू में शरद ने कहा, 'मैं पिछले सात साल से न्यूयॉर्क में रह रहा था। मैं सिर्फ एक साल पहले ही वापस आया हूं। वीडियो बनाने का मकसद अपने साथियों की बुराई करना नहीं था। मेरी इंडस्ट्री में मेरे अपने लोग भरे हुए हैं। वे मेरे परिवार की तरह हैं। मुझे पैसों की मदद की जरूरत नहीं है और मैंने कभी इस वजह से भी प्रोजेक्ट्स नहीं चुने हैं।' उन्होंने आगे कहा, 'अगर हम एक-दूसरे की बुराई करेंगे, तो इससे लोगों को भी हमारी बुराई करने का मौका मिलता है। मुझे पहले ही एक हॉलीवुड फिल्म का ऑफर मिल चुका है, जिसकी शूटिंग मैं जनवरी में शुरू करूंगा। मैं बॉलीवुड प्रोजेक्ट्स पर भी काम करना जारी रखूंगा। यह मेरा देश है। दो महीने में जैसे ही मैं पूरी तरह ठीक हो जाऊंगा, चीजें फिर से पटरी पर लौट आएंगी।' काम मांगने के लिए की थी भावुक अपीलः-दरअसल, शरद कपूर का एक वीडियो इंस्टाग्राम पर सामने आया था, जिसमें वह अपनी निजी और प्रोफेशनल परेशानियों के बारे में बात करते नजर आए थे। वीडियो में उन्होंने इंडस्ट्री के उन लोगों से काम दिलाने की अपील की थी, जिनके साथ वह सालों तक काम कर चुके हैं। उन्होंने कहा था कि वह दोबारा अपना करियर पटरी पर लाना चाहते हैं। शरद ने 2024 में मुंबई पुलिस में दर्ज हुए यौन उत्पीड़न के मामले का भी जिक्र किया। उन पर 32 साल की एक एक्टर और प्रोड्यूसर ने सेक्शुअल हैरेसमेंट का केस लगाया था। इस मामले के बाद वह डिप्रेशन में चले गए थे और लोगों से मिलना-जुलना भी बंद कर दिया था। इस बारे में उन्होंने कहा, 'जब कोई आप पर किसी ऐसी चीज का आरोप लगाता है, जो आपने की ही नहीं है, तो जाहिर है आपको दुख होता है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड
न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र) 211002 से
मुद्रित एवं सी-41यूपी
एसआईडीसी औद्योगिक
क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।